सितम्बर–२०२५ ◆ वर्ष १४ ◆ अंक ०५ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक
सितम्बर–२०२५

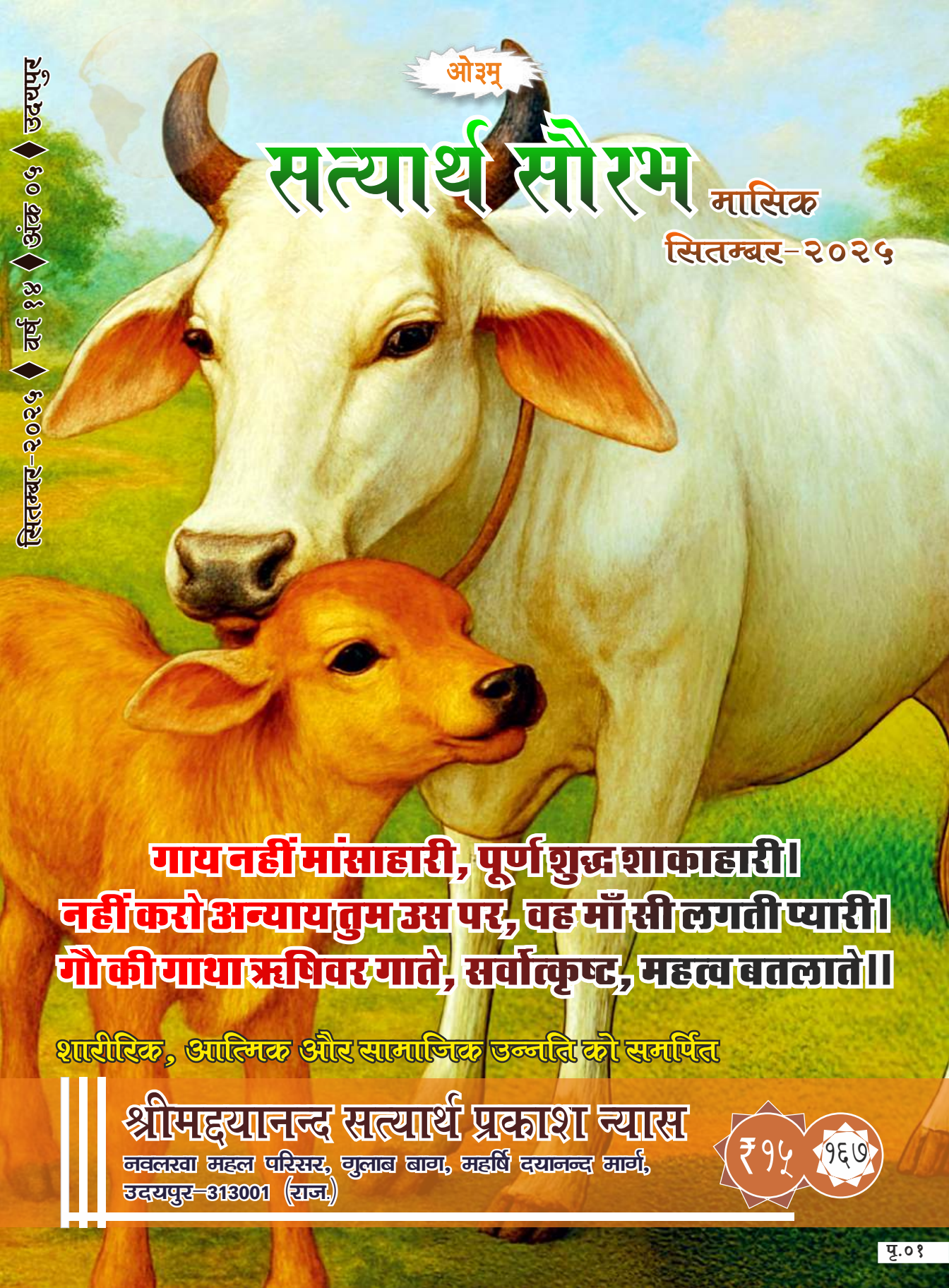

गाय नहीं मांसाहारी, पूर्ण शुद्ध शाकाहारी।
नहीं करो अन्याय तुम उस पर, वह माँ सी लगती प्यारी।
गौ की गाथा ऋषिवर गाते, सर्वोत्कृष्ट, महत्व बतलाते।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹१५ १६७

भारत के सरताज

महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

MDH
मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले सच-सच

For More Information Visit us on :

mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | SpicesMdh

www.mdhspices.com

SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक – सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक

डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

डॉ.सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	11000 रु.	$ 1250
आजीवन	1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	600 रु.	$ 125
वार्षिक	150 रु.	$ 30
एक प्रति	15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत् १९६०८५३१२५
भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा
विक्रम संवत् २०८२
दयानन्दाब्द २०१

September- 2025

०६ **गाय को मांस**

१० **वाल्मीकि रामायण का उत्तरकाण्ड तथा सीता की अग्निपरीक्षा**

समाचार २९

०४ वेद सुधा

१४ मिट्टी की मुट्ठी में आजादी का सपना

१६ भारतीय संस्कृति की पहचान हिन्दी

२० सत्यार्थ मित्र बने

हलचल ३०

२१ समझें तो आर्य समाज है क्या?

२३ देवपूजा का माध्यम यज्ञ है

२५ श्वास रोग की आयुर्वेदिक चिकित्सा

२७ कथा सरित- कहानी दयानन्द की

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

स्वामी श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १४ अंक -०५

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास

सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001

(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159

www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक– मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

परमात्मा की खोज

परीत्य भूतानि परीत्य लोकान् परीत्य सर्वाः प्रदिशो दिशश्च।
उपस्थाय प्रथमजामृतस्यात्मनात्मानमभि सं विवेश।। - यजुर्वेद ३२/११

भूतानि- सब भूतों की, **परि+इत्य-** पूर्ण रूप से जाँच करके, **लोकान्-** सब लोकों, कर्म-फल-भोगों की, **परि+इत्य-** परीक्षा करके, **च सर्वाः** - और सब, **प्रदिशः दिशः-** उपदिशाओं और दिशाओं की अथवा देश-देशान्तर की, **परि+इत्य-** परीक्षा करके, **ऋतस्य-** ऋत, एकरस प्रवाहित होनेवाले सत्य के, **प्रथमजाम्-** प्रथम उत्पादक के भीतर, **उपस्थाय-** उपस्थित होकर, **आत्मना-** आत्मा के द्वारा, **आत्मानम्-** व्यापक परमात्मा में, **अभिसंविवेश-** मैं प्रवष्टि हो गया हूँ।

व्याख्या

प्रभु के दर्शन बिना मृत्यु-भय नहीं छूट सकता, अतः भगवान् के दर्शन अवश्य करने चाहिए। संसार के एक-एक पदार्थ को ईश्वर समझकर उसके पास गये, किन्तु वहाँ रस न था, प्रभु की पहचान वेद ने बताई थी- **रसेन तृप्तः**=रस से तृप्त। ये रस से खाली मिले। इनको प्रभु समझना साधक की भूल थी, वह इन रस-रिक्त पदार्थों से विरक्त हो जाता है, उसका चित्त ऊब जाता है।

परीक्ष्य लोकान्कर्मचितान्ब्राह्मणो निर्वेदमायान्नास्त्यकृतः कृतेन। - मुण्डकोप. १/२/१२

कर्म से संचित लोकों (भोगों) की परीक्षा करके ब्राह्मण (ब्रह्मज्ञानी) दुःखी हो उठता है और कहता है- 'विनाशी पदार्थों से वह अविनाशी नहीं मिल सकता।'

किन्तु इस खोज के लिए देश-देशान्तर घूमने और सब भूतों के निरीक्षण से उसे परमतत्त्व का कुछ-कुछ आभास मिलता है और वह उसका उपस्थान करता है। निकट होकर उसे अपनाने का यत्न करता है। तब उसे पता लगता है कि:-

दिव्ये ब्रह्मपुरे ह्येष व्योम्न्यात्मा प्रतिष्ठितः। - मुण्डकोप. २/२/७

अन्तरात्मा इस हृदयाकाशरूपी दिव्य ब्रह्मपुर में विराजमान है।

जिसकी खोज को बाहर भटक रहे थे, वह तो अपने अन्दर बैठा है, अतः -

आत्मनात्मानमभिसंविवेश-

'वह आत्मा के द्वारा उस परमात्मा में प्रवेश करता है।'

शरीर इन्द्रियादिक को छोड़कर आत्मा को उसमें लगाने का यत्न करता है।

उपनिषत् ने कहा-

स एषोऽन्तश्चरते बहुधा जायमानः। ओमित्येवं ध्यायथ आत्मानम्।। - मुण्डको. २/२/६

वह अन्तरात्मा अनेक प्रकार से प्रकट होता हुआ अन्दर विचर रहा है। 'ओम्' पद के द्वारा उसका ध्यान करो।

भगवान् को- अन्तरात्मा भगवान् को पाना है, तो 'ओम्' के द्वारा उसका स्मरण करो। वेद ने भी कहा है-

ओम् स्मर= ओम् को सिमर।

भगवान् के अनन्त नाम हैं, क्योंकि भगवान् के गुण अनन्त हैं। एक-एक गुण का प्रकाशक, एक-एक नाम है। उसका निज नाम 'ओम्' है। इसमें सीधी-साधी युक्ति यह है कि मनुष्य तन ही ऐसा है, जिसमें रहकर आत्मा परमात्मा की प्राप्ति कर सकता है, अतः परमात्मा की प्राप्ति का साधन ऐसा होना चाहिए जिसे असमर्थ-से-असमर्थ मनुष्य भी प्रयोग में ला सके। यदि मनुष्य जन्म पाकर अंग आदि की विकलांगता के कारण वह परमेश्वर को पाने के अयोग्य हो जाए, तो परमेश्वर का उसे नर-तन देना व्यर्थ हो जाए, अतः परमात्मा के प्रणिधान का साधन उसका नाम ऐसा होना चाहिए, जिसे गूँगा तक भी ले-सके। गूँगा गॉड (God), रहीम, रहमान, भगवान् आदि पवित्र नामों का उच्चारण नहीं कर सकता, किन्तु 'ओम्' पद का उच्चारण वह भी कर सकता है, अतः 'ओम्' परमात्मा का निज नाम है। इस 'ओम्' की आराधना के लिए किसी बाह्यकरण की आवश्यकता नहीं। कहा भी है-

न चक्षुषा गृह्यते नापि वाचा नान्यैर्देवैस्तपसा कर्मणा वा।
ज्ञानप्रसादेन विशुद्धसत्त्वस्ततस्तु तं पश्यते निष्कलं ध्यायमानः।। - मुण्डको. ३/१/८

भगवान् का ज्ञान न आँख से होता है, न वाणी से, न ही अन्य इन्द्रियों द्वारा इसका ज्ञान होता है। कोरे तप और थोथे कर्म से

उसका बोध नहीं होता। ज्ञान द्वारा अपने आत्मा को शुद्ध करके जो उस निर्विकार का ध्यान करता है, उसके दर्शन कर पाता है।

तलवकार ऋषि ने भी यही बात कही है-

न तत्र चक्षुर्गच्छति न वाग्गच्छति नो मनः।

वहाँ आँख नहीं जा पाती, न वाणी की वहाँ गति है। वह तो मन की पहुँच से भी बाहर है, अतः -

आत्मनात्मानमभिसंविवेश।

'मै अपने आत्मा के द्वारा उस अन्तरात्मा में प्रवेश करता हूँ।

आत्मा के द्वारा अन्तरात्मा में प्रवेश तभी हो सकेगा, जब बाह्य विषयों से आत्मा पराङ्मुख हो जाए, उनसे मुख मोड़ ले। अज्ञान

के कारण वह अपने भीतर विद्यमान् आनन्द-सागर, परम पवित्र रस-सरोवर में डुबकी न लगाकर बाह्य गन्दभरे तालों में गोते खा रहा है। दोनों में विवेक के लिए इसे पहले 'ऋत के प्रथम प्रवर्त्तक' वेद का अभ्यास करना होगा। तैत्तिरीय लोग कह गये हैं- **'नावेदविन्मनुते तं बृहन्तम्'**- 'वेदज्ञानविहीन मनुष्य उस महान् भगवान् का मनन (चिन्तन)- भजन नहीं कर सकता', अर्थात् जिसकी आराधना करनी है, उसके स्वरूप का यथार्थज्ञान तथा उसके आराधन के सच्चे विधान का ज्ञान होना अतीव आवश्यक है। उसका यथार्थज्ञान विषय विष से बचाकर ब्रह्मामृत की ओर प्रेरित करता है। ब्रह्मामृत का सरोवर अपनी आत्मा में बह रहा है, अतः उसमें डुबकी लनाने के लिए अन्दर की ओर जाना होता है। उधर जाने की भावना के जागने पर ये बाह्य साथी छूट ही जाते हैं।

संकलन कर्त्ता एवं भाष्यकार- स्वामी वेदानन्द तीर्थ
सम्पादक- स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
साभार- स्वाध्याय-सन्दीप

नम्र निवेदन

आदरणीय आर्य भाई एवं बहनों

अक्टूबर के अन्त में आयोज्य **अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन; दिल्ली** में आप जो भी लोग पधार रहे हैं, विशेष रूप से विदेश से जो लोग आ रहे हैं उनकी सेवा में नम्र निवेदन है कि अपना कार्यक्रम कुछ इस प्रकार बनाएँ कि सम्मेलन से पूर्व अथवा सम्मेलन के पश्चात् उदयपुर अवश्य आने और महर्षि दयानन्द की कर्मस्थली, सत्यार्थ प्रकाश जैसे अद्भुत ग्रन्थ की रचना स्थली नवलखा महल; उदयपुर में जो अद्भुत विश्व वन्दनीय स्मारक बनाया गया है उसका अवलोकन अवश्य करें। बस इतना ही हम कह सकते हैं कि आप निराश नहीं होंगे। नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र विश्व भर से उदयपुर आने वाले पर्यटकों के मध्य एक प्रमुख सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में अपनी पहचान बनाता जा रहा है। अतः आप लोगों को अवश्य यहाँ आकर इसका अवलोकन कर हमारा मार्गदर्शन करना चाहिए।

सधन्यवाद

सत्यार्थ सौरभ की रजिस्टर्ड पोस्टल सेवा

सत्यार्थ सौरभ के सम्मानित सदस्यगण! हमें पता है कि आप लोगों में से अनेकों को सत्यार्थ सौरभ पत्रिका या तो समय से नहीं मिलती है या फिर मिलती ही नहीं है। इसलिए न्यास ने एक निर्णय लिया है कि अगर आप एक वर्ष में रुपये 542/- (Postage हेतु) देते हैं तो आपको पत्रिका रजिस्टर्ड भेजी जाएगी। ताकि फिर भी पत्रिका प्राप्त नहीं होती है तो आप पोस्ट ऑफिस में शिकायत दर्ज करवा सकते हैं जिससे ये समस्या सुलझ सकती है।

आत्म निवेदन

क्रूरता की पराकाष्ठा
गाय को मांस

ट्रंप साहब जब से दूसरी बार अमेरिका के राष्ट्रपति चुने गए हैं तब से वे समझ में न आने वाले, बार-बार झूठ बोलने वाले व्यक्ति के रूप में दिखायी दे रहे हैं। विश्व के सबसे शक्तिशाली राष्ट्र का राष्ट्रपति क्या यह कह कर ब्राजील पर अत्यधिक टैरिफ लगा सकता है कि ब्राजील का वर्त्तमान राष्ट्रपति निवर्त्तमान राष्ट्रपति जो कि ट्रंप का दोस्त है, से अच्छा व्यवहार नहीं करता इसलिए यह टैरिफ लगाया जा रहा है। और उसके इस रवैये का अमेरिका में कोई विरोध भी नहीं हो रहा, यह कैसा लोकतंत्रात्मक देश है? खैर हम जिओपोलिटिकल स्थिति पर नहीं लिख रहे। यह उद्धहरण भी इसलिए दिया है क्योंकि इस लेख में ट्रंप के अत्यन्त निन्दनीय डबल स्टैण्डर्ड की बात हम करेंगे।

अब हमारे लेख के मूल विषय की ओर आते हैं। क्या आप जानते हैं कि गाय जैसे शाकाहारी प्राणी को मांस और रक्त आहार के रूप में खिलाया जाता है। अगर आप नहीं जानते तो सही उत्तर सुनकर चौंक जायेंगे क्योंकि इसका उत्तर है- हाँ।

अमेरिका में वाणिज्यिक डेयरी फार्मों में गायों को पारम्परिक घास (grass) या चारा (fodder) के स्थान पर निम्न प्रकार के सस्ते, उच्च कैलोरी वाले पदार्थ विकल्प में दिए जाते हैं-

कॉर्न (मक्का) और सोया के साथ-साथ 'By-products' जैसे बीयर के किण्वन के बाद बची हुई सामग्री (distillers grains), चिकन लिटर, ब्लड मील, बोन मील, और फैट्स आदि।

ये तत्व होते क्या हैं यह भी जान लीजिये-

- ब्लड मील (Blood meal)- वध किए गए जानवरों के रक्त से बना।
- बोन मील (Bone meal)- हड्डियों से बना पाउडर।
- एनिमल फैट्स- चिकन, टर्की या पोर्क के वसा।
- चिकन लिटर- पोल्ट्री के मल और बिस्तर का मिश्रण।

इस प्रकार गाय को शाकाहारी भोज्य पदार्थों के साथ-साथ मांसाहार तथा अखाद्य पदार्थ खिलाये जाते हैं।

अमेरिका में रहने वाले प्रायः लोग इस बात की परवाह नहीं करते कि जो दूध वे पी रहे हैं उन पशुओं को चारा क्या खिलाया जा रहा है, और न वे इस बात का विरोध करते हैं कि एक पशु के स्वाभाविक आहार के विरुद्ध उसे

आहार दिया जा रहा है। कल्पना कीजिए आप शाकाहारी हैं और आपको बलात मांस खिलाने का प्रयास किया जाता है तो आप कैसा अनुभव करेंगे? निश्चित ही आप इसका घोर विरोध करेंगे और यह भी कहा जा सकता है कि मरते मर जायेंगे परन्तु मांस या उसके उत्पाद नहीं खायेंगे। पशु मूक प्राणी है और वह भी गाय, जिससे सीधा कोई पशु सम्पूर्ण धरा पर नहीं है। वह शाकाहारी है इसमें कोई सन्देह नहीं परन्तु अपने को विश्वभर में सबसे सभ्य मानने वाले लोग उसे उसकी प्रकृति के विरुद्ध मांस ओर उसके अवशेष खिला रहे हैं, खून पिला रहे हैं हड्डियों का चारा खिला रहे हैं, ताकि उनको ज्यादा दूध मिल सके। इससे अधिक क्रूरता क्या होगी? यहाँ तक कि गायों को रेंडर्ड बीफ प्रोडक्ट्स जैसे अन्य गायों के मस्तिष्क और रीढ़ की हड्डी के अवशेष खिलाये जाते थे उस पर १९९७ में FDA ने प्रतिबन्ध लगा दिया था। वह गाय पर दया आने के कारण नहीं बल्कि उससे 'मेड काऊ' रोग होने का खतरा बन रहा था इसलिए।

हाँ अमेरिका में कुछ मुट्ठी भर लोग इस बात पर ध्यान देते हैं कि गाय को आहार क्या दिया जा रहा है, ऐसे लोग "Organic Milk", "Grass-fed", "Non-GMO" जैसे लेबल को प्राथमिकता देते हैं। उन्हें यह चिन्ता रहती है कि गाय के आहार में क्या-क्या मिला है और वे मांसाहारी फीड वाले दूध से बचना चाहते हैं। इनकी मांग पर अब अमेरिका में ओर्गानिक डेरीफार्म खुल रहे हैं।

यहाँ यह भी समझ लें कि अमेरिका में गौदुग्ध को पौष्टिक बनाने के उद्देश्य से ये मांसाहारी अवयव नहीं खिलाये जाते वरन् ज्यादा से ज्यादा मात्रा में दूध मिले इसलिए यह दुष्कृत्य किया जाता है जो किसी देश के कानून का उल्लंघन है या नहीं, यह तो हम नहीं जानते परन्तु प्राकृतिक न्याय तथा परमेश्वर की व्यवस्था की दृष्टि से घोर पाप है यह सुनिश्चित है। जितने भी प्राणी हैं उनका अपना स्वाभाविक भोजन होता है। उसकी प्रकृति के विरुद्ध भोजन हेतु विवश करना पाप ही है। गाय एक शाकाहारी प्राणी है, उसके पाचन तंत्र की बनावट एवं अन्य संरचना ऐसी ही है। वह मांस या वैसे अवयव पचाने योग्य नहीं है।

गाय का प्राकृतिक स्वभाव: शाकाहारी चेतना का प्रतीक

गाय शुद्ध रूप से एक शाकाहारी प्राणी है 'यह केवल वनस्पति-आधारित आहार ग्रहण करती है।' इसके समर्थन में वैज्ञानिक, शारीरिक और व्यवहारिक आधारों पर कई ठोस तर्क प्रस्तुत किये जा सकते हैं। पाठकों के लाभार्थ कुछ तथ्य प्रस्तुत हैं-

1. दन्त संरचना (Teeth Structure)– शाकाहारी के अनुकूल

- ☞ गाय के दांत समतल और चौड़े होते हैं जो घास, चारा और पत्तियाँ चबाने के लिए अनुकूल होते हैं।
- ☞ इसमें नुकीले दांत (Canines) नहीं होते जो मांस नोचने वाले मांसाहारी प्राणियों में पाए जाते हैं।
- ☞ इसका जबड़ा ऊपर-नीचे के साथ-साथ बाएँ-दाएँ घूमता है, जिससे यह चारा को महीन चबाकर पचा सकती है। 'यह विशिष्ट रूप से शाकाहारी विशेषता है।'
- ☞ गाय पानी घूँट भरकर पीती है, जो शाकाहारियों की पहचान है क्योंकि मांसाहारी जीभ से पानी पीते हैं।

2. पाचन तंत्र (Digestive System)– रूमिनेंट प्राणी

- ☞ गाय एक रूमिनेंट (Ruminant) प्राणी है, जिसके पेट में चार भाग (Rumen, Reticulum, Omasum, Abomasum) होते हैं। यह संरचना विशेषतः सेलुलोज युक्त भोजन (जैसे घास, भूसा, पत्तियाँ) को पचाने के लिए होती है।

☞ रूमेन में करोड़ों सूक्ष्मजीव (Bacteria, Protozoa) रहते हैं जो वनस्पति को किण्वित करके पचाते हैं, मांस को पचाने की कोई विशेषता नहीं होती।

3. शारीरिक रचना– नख, पंजे नहीं

☞ गाय के पैर चपटे खुर वाले होते हैं, जो खेतों में चलने व वनस्पति चरने के लिए बने हैं यह मांसाहारी के पंजों या शिकार करने वाले नखों से पूरी तरह भिन्न हैं।

4. जैविक ऊर्जा रूपांतरण (Metabolic Adaptation)

☞ गाय का मेटाबोलिज्म धीमा होता है और यह फाइबर युक्त भोजन से ऊर्जा उत्पन्न करने में दक्ष होती है।

इसके विपरीत मांसाहारी प्राणी प्रोटीन व फैट को ऊर्जा में बदलने की उच्च क्षमता रखते हैं।

5. मल संरचना और गैस उत्सर्जन

☞ गाय के मल में फाइबर अधिक होता है, जो पत्तियाँ और चारा पचाने से बनता है। इसमें मांस, खून या प्रोटीन पाचन से उत्पन्न यौगिक नहीं मिलते।

☞ गैस उत्सर्जन (जैसे मीथेन) भी इसका प्रमाण है कि यह वनस्पति पाचन का परिणाम है, न कि मांस पाचन का।

6. नैतिकता और व्यवहार

☞ गाय शाकाहारी भोजन को भी शान्ति और सन्तुलन से ग्रहण करती है 'उसमें मांसाहारी प्राणियों जैसी लालच, हिंसा या झपट्टा मारने की प्रवृत्ति नहीं होती।' गाय का दूध ''अहिंसक आहार" माना जाता है और मानसिक शान्ति, रोग प्रतिरोधक क्षमता, और पोषण का स्रोत है। उसे बलात् मांसाहारी बनाना घोर आपत्तिजनक है।

अब तनिक भारत और गाय की बात कर लें। परमपिता परमात्मा ने आचार संहिता के रूप में मानव पीढी को जो निर्देश दिए थे वे वेद में हैं। सभी प्राणियों की अपनी-अपनी उपयोगिता है परन्तु गाय को उसके स्वभाव, प्रकृति और सात्विकता के आधार पर माँ का दर्जा दिया गया है। **'गावो विश्वस्य मातरः।'** गाय विश्व की माता है। माता के दुग्ध पान के अभाव में गाय ही शिशु को अमृतपान कराती है।

महर्षि दयानन्द ने अपनी गौ करुणानिधि पुस्तक में लिखा है- 'गौ आदि पशु जहाँ तक सामर्थ्य हो बचाए जावें और उनके बचाने से दूध घी और खेती बढ़ने से सबको सुख बढ़ता रहे, परमात्मा कृपा करे कि यह अभीष्ट शीघ्र सिद्ध हो।'

जैसा हमने कहा भारत में गाय को केवल एक पशु नहीं माना जाता, बल्कि वह 'गौमाता' के रूप में पूज्य है। उसकी सेवा और रक्षण को धार्मिक कर्तव्य, संस्कृति का हिस्सा और आध्यात्मिक साधना माना गया है।

भारत के अधिकांश लोग यह नहीं जान पाते कि अमेरिका या अन्य देशों से आयातित पनीर, दूध पाउडर या डेयरी उत्पाद किन शर्तों पर प्राप्त हुए हैं। यदि वह दूध मांसाहारी पोषण पर पलने वाली गाय से आया है, तो यह उनकी आस्था, भोजन की शुद्धता और नैतिक भावना के विरुद्ध होगा।

'एक भारतीय को यह अधिकार है कि वह यह जान सके कि जिस दूध का वह सेवन कर रहा है, वह 'गौमाता' की शुद्धता का अपमान तो नहीं कर रहा।'

नैतिकता, संस्कृति, और उपभोक्ता अधिकारों के आधार पर भारत निश्चित ही ऐसा दूध आयात करने से पूर्व

सुनिश्चित करे कि लेबलिंग अनिवार्य की जाए: संवेदनशील दुग्ध एवं दुग्ध से बने उत्पादों के आयात पर नैतिक फिल्टर के रूप में 'गायों को मांसाहारी फीड नहीं दिया गया' यह लेबल हो।

हम बलपूर्वक कहना चाहते हैं कि गाय, एक शान्त, सेवाभावी और शुद्ध आहार वाली प्राणी है। उसे विपरीत प्रकृति का भोजन देना न केवल अमानवीय है, बल्कि उससे प्राप्त दूध को भारत जैसे गौ के प्रति संवेदनशील देश में बेचना नैतिक आक्रमण जैसा है।

भारत का प्रत्येक नागरिक यह अधिकार रखता है कि जो भोजन वह ग्रहण करे, वह उसकी संस्कृति, श्रद्धा और शुद्धता की मर्यादा में हो। भारत को चाहिए कि वह 'गौ-रक्षण' को केवल वधगृह तक सीमित न रखकर गौ-आहार की शुद्धता तक विस्तारित करे, और ऐसे दूध का आयात न करने हेतु अड़ा रहे।

यहाँ यह आवश्यक है कि हम अमेरिका का वास्तविक चेहरा पाठकों के लिए प्रस्तुत कर दें। जो अमेरिका भारत को इस प्रकार का प्रमाण-पत्र देने को तैयार नहीं है कि हम जो दूध भारत को निर्यात कर रहे हैं वह उन गायों का है जिनको किसी प्रकार का मांसाहारी खाद्य भोजन रूप में नहीं दिया गया है। वही अमेरिका मुस्लिम बहुल देशों को हलाल प्रमाण-पत्र दे रहा है।

अमेरिका और अन्य पश्चिमी देश उन मुस्लिम देशों में केवल 'हलाल सर्टिफाइड' (Halal Certified) खाद्य और मांस उत्पाद ही भेजते हैं जहाँ ऐसी शर्त कानूनी, सांस्कृतिक या धार्मिक रूप से अनिवार्य होती है। यहाँ यह भी समझ लें कि हलाल प्रमाण-पत्र आखिर है क्या?

हलाल (Halal) का अर्थ है- वह जो इस्लामिक शरीअत के अनुसार अनुमेय है।

हलाल सर्टिफाइड खाद्य उत्पादों के लिए शर्तें:

- ☞ जानवर का वध इस्लामी रीति से हुआ हो (जबीहा)।
- ☞ वध के समय अल्लाह का नाम लिया गया हो।
- ☞ खून पूरी तरह निकाला गया हो।
- ☞ किसी भी हराम (जैसे सूअर, शराब आदि) तत्व की मिलावट न हो।

सऊदी अरब, यूएई, कतर ,मलेशिया, इंडोनेशिया, ईरान, कुवैत, ओमान आदि देशों में केवल वही खाद्य व मांस उत्पाद आयात हो सकते हैं जो:''हलाल सर्टिफाइड" हों।

अमेरिका में कई हलाल सर्टिफिकेशन एजेंसियाँ हैं, जो विशेष रूप से मुस्लिम देशों के लिए निर्यात हेतु हलाल प्रमाण-पत्र जारी करती हैं: IFANCA (Islamic Food and Nutrition Council of America) HFSAA (Halal Food Standards Alliance of America) ISWA Halal Certification Department आदि। अमेरिका यदि इन देशों को हलाल सर्टिफाइड माल न भेजे, तो उसे प्रवेश ही नहीं मिलेगा। यहाँ अमेरिका नॉन-हलाल उत्पाद नहीं भेजता है। भारत के सन्दर्भ में वह गौ के शाकाहारी आहार जैसा प्रमाण-पत्र देने को तैयार नहीं है। यही अमेरिका का डबल स्टैण्डर्ड है।

इसलिए भारत ने स्पष्ट कहा: यदि गाय को मांस खिलाया गया, तो उसका दूध भारत में नहीं बिक सकता।

यह न केवल धार्मिक स्वतंत्रता, बल्कि उपभोक्ता अधिकार और संवैधानिक मूल्यों से जुड़ा विषय बन चुका है। भारत अब US से 'Vegetarian Feed Certificate' या समकक्ष प्रमाणीकरण की मांग कर रहा है। इसलिए हम भारत सरकार की मांग का पुरजोर समर्थन करते हैं। यह प्रमाणित होना ही चाहिए कि- गाय को मांसाहारी चारा नहीं दिया गया, और वह दूध सात्विक और नैतिक रूप से शुद्ध स्रोत से आया है, और हम पाठकों से भी ऐसे ही समर्थन का निवेदन करते हैं।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

वाल्मीकि रामायण का उत्तरकाण्ड तथा सीता की अग्निपरीक्षा

भारतीय आर्य प्राचीन काल से ही काव्य (कविता) के उत्साही प्रेमी थे। १७८४ ई. में एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना करने वाले सर विलियम जोन्स कहते हैं कि 'काव्य कला दैवी (Divine Art) है। कविता पहले स्वर्ग में रची जाती थी, फिर उसे वाल्मीकि ने धरती पर उद्घाटित किया। निखिल विश्व में निम्नांकित तीन ग्रन्थ सर्वातिशायी हैं-

(१) वेद (२) रामायण (३) महाभारत।

इन तीनों ग्रंथों का प्रभाव न केवल भारतवर्ष में अपितु सम्पूर्ण संसार के साहित्य में सर्वाधिक देखा जाता है। वेदों के शब्द (पद) संसार की सभी भाषाओं में तत्सम या तद्भव रूप में पाए जाते हैं। रामायण और महाभारत में जिन स्थानों (भौगोलिक क्षेत्रों) का नाम उल्लेख किया गया है वे आज भी हमारे बीच मौजूद हैं। रामायण और महाभारत के पात्रों के नाम आज से हजारों वर्ष पूर्व रखे गए थे और वे नाम राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, सुग्रीव, हनुमान, दशरथ, सीता, कौशल्या, सुमित्रा, अनुसूया, तारा आदि आज भी सहस्राब्दियों से रक्खे जा रहे हैं। इसी प्रकार रामायण में जिनका गर्हित चरित्र रहा, उन रावण, कुम्भकर्ण, कैकेयी, मन्थरा और शूर्पणखा के नाम आज भी भारतीय समाज में नहीं रखे जाते। वाशिंगटन स्थित 'मिडिल ईस्ट मीडिया रिसर्च इंस्टीट्यूट' के निदेशक श्री तुफैल अहमद भारतीयों की अस्मिता और पहचान रामायण के आदर्शों और सन्देशों में देखते हैं। रामायण की कथा से बालक, वृद्ध, स्त्री, पुरुष सभी को केवल शिक्षा ही नहीं मिलती है अपितु शिक्षा के साथ-साथ आनन्द भी मिला है। विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शब्दों में 'यदि कवि वाल्मीकि मनुष्य के चरित्र का वर्णन न कर देव-चरित्र का वर्णन करते तो अवश्य ही रामायण का गौरव कम हो जाता.....। राम के मनुष्य होने से ही रामचरित की इतनी महिमा है। रामायण में देवता ने पदच्युत् होकर अपने को मनुष्य नहीं बनाया, मनुष्य ही अपने गुणों के कारण देवता बन गया है।' शताब्दियों/सहस्राब्दियों से महर्षि बाल्मीकि की यह भविष्यवाणी चरितार्थ हो रही है-

यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावद्रामायणकथा लोकेषु प्रचरिष्यति॥

(बालकाण्ड २/३६)

प्रक्षेपानुसन्धान

संस्कृत भाषा में निबद्ध अधिकांश प्राचीन साहित्य में प्रक्षेप हुए हैं। वैदिक संहिताओं को छोड़कर रामायण, महाभारत तथा मनुस्मृति जैसे प्रख्यात् ग्रन्थ (जो सहस्त्राब्दियों से विद्वज्जनों से लेकर सामान्यजनों तक के कण्ठहार बने हुए हैं) भी इससे बच नहीं सके। वेद मंत्रों के अष्ट विकृतपाठों के कारण ही विशेषतया क्रमपाठ तथा घनपाठ की जटिलता ने वैदिक संहिताओं के पाठों को विकृत होने तथा प्रक्षेप की सम्भावनाओं को असम्भव बना दिया है। इसके अतिरिक्त वैदिक वाङ्मय में अनुक्रमणीकारों ने बहुपरिश्रमसाध्य ऋषि, देवता, छन्द, वर्ण, मात्रा तथा स्वरों तक की गणना कर रक्खी है, जिसके कारण मन्त्र संहिताओं में प्रक्षेप करने का कोई साहस नहीं

कर सका। कतिपय ब्राह्मणग्रन्थों के स्वरांकित होने पर भी पशुमांसलोलुप कर्मकाण्डियों ने परवर्ती ब्राह्मण ग्रन्थ और कल्पसूत्र साहित्य में भी प्रक्षेप करने में कोई कोर-कसर उठा नहीं रक्खी। पुनरपि पूर्वापर क्रम का ध्यान रखने पर यह प्रक्षेप-स्थल स्पष्ट हो जाता है। किन्तु लौकिक संस्कृत साहित्य का आदिकाव्य 'रामायण' से लेकर भक्तिकालीन 'रामचरितमानस' प्रभृति ग्रन्थों में प्रक्षेपों की अधिकता देखने को मिलती है। रामचरितमानस का

पूरा 'लवकुशकाण्ड' प्रक्षिप्त है। इसी प्रकार वाल्मीकीय रामायण का सम्पूर्ण उत्तरकाण्ड प्रक्षिप्त है। क्योंकि कोई भी ग्रन्थ 'फलश्रुति' तक ही पर्यवसित माना जाता है। 'रामायण' में यह फलश्रुति युद्धकाण्ड के १२८वें सर्ग के १०७वें श्लोक से प्रारम्भ होकर १२५वें श्लोक तक है।

इसके अतिरिक्त भी उत्तरकाण्ड के प्रक्षिप्त होने में अन्य भी प्रबल हेतु हैं। उत्तरकाण्ड के द्वितीय सर्ग से लेकर ३४वें सर्ग तक रावण तथा राक्षसों का ही वर्णन है, जिसका रामकथा से कोई सम्बन्ध ही नहीं है। उत्तरकाण्ड की रचना-शैली काव्य-शैली न होकर पुराण-शैली है। वाल्मीकि स्थान-स्थान पर प्रकृति, पर्वत, वन, ऋतुओं और पशु-पक्षियों का वर्णन भी करते हैं जो उत्तरकाण्ड में अंशमात्र भी नहीं है। वाल्मीकि की उपमाएँ आनन्दप्रद और प्रासंगिक हैं, जिनका उत्तरकाण्ड में सर्वथा अभाव है। रामायण में आगत पात्रों के जन्मादिप्रभृति अन्तर्कथाओं का विस्तार विभिन्न पुराणों में पाया जाता है, जिसे रामायण के कथावाचकों नें पुराणों से लेकर यहाँ जोड़ दिया है। इन अन्तर्कथाओं की पूरी विवेचना रामकथा के उद्भव और विकास की पूरी यात्रा के गवेषक और शोधप्रज्ञ सम्मान्य फादर कामिल बुल्के ने की है। सुधी पाठकों को इस विषय की विस्तृत जानकारी बुल्के के प्रख्यात् शोधग्रन्थ रामकथा उत्पत्ति और विकास (प्रकाशक-हिन्दी परिषद्, हिन्दी विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय, १९५० ई०, षष्ठ संशोधित संस्करण १९९९ ई.) से मिल सकती है।

वाल्मीकीय रामायण के शोधकर्त्ताओं का निष्कर्ष है कि बालकाण्ड का अधिकांश तथा सम्पूर्ण उत्तरकाण्ड निःसन्देह प्रक्षिप्त है। इसके अतिरिक्त मध्यवर्ती काण्डों में भी अनेक स्थलों पर परवर्ती कथावाचकों ने प्रक्षिप्तांश समाविष्ट कर दिये हैं। कतिपय विज्ञजन यथार्थ स्थिति को जानते हुए भी पौराणिक मान्यताओं से निज की अत्यन्त आसक्तिवश इस पर लिखने तथा बोलने से बचते हैं। शम्बूक प्रसंग, ययाति-शुक्राचार्य, लवणासुर तथा ब्राह्मण बालक की मृत्यु को शूद्र की तपस्या से जोड़ देने जैसी अधिकांश सामग्री का रामायण से कोई सम्बन्ध ही नहीं है। सीता का निर्वासन भी बाद में जोड़ा गया अंश है। प्रक्षिप्तांशों की पहचान के लिए शोधपरक दृष्टि का होना आवश्यक है। इसकी अनेक कसौटियाँ हैं- मूल कथावस्तु से सीधा सम्बन्ध न होना, चमत्कारों का प्रदर्शन, अयुक्तिसंज्ञक कथन तथा अमानवीय प्रवृत्तियों की भरमार इत्यादि। प्रक्षेपों की परम्परा का मुख्य आधार राम का ईश्वरीय परब्रह्म के रूप में उपपादन, अवतारवाद, अवान्तरकथाएँ, भिन्न प्रसंग, अतिशयोक्ति तथा पुनरुक्तियाँ हैं, जबकि रामायण का मूल स्वर नरत्व है देवत्व नहीं। वाल्मीकि अनेक मानवगुणों से युक्त किसी पुरुष के बारे में जानना चाहते हैं- **ज्ञातुमेवंविधं नरम्।** नारद उनको ऐसे ही पुरुष के बारे में बतलाते हैं- **तैर्युक्तः श्रूयतां नरः** (बालकाण्ड १/७)। इसी तरह सीता नारियों में श्रेष्ठ है- **नारीणामुत्तमा वधूः** (१/२७)। रावण की मृत्यु और सीता की मुक्ति के बाद राम इसी नरत्व या मानवीय पक्ष पर जोर देते हैं- **दैवसम्पादितो दोषो मानुषेण**

मया जितः (युद्धकाण्ड ११५/५)। अर्थात् रावण सीता को हर ले गया, वह दोष दैव सम्पादित था, मैंने मनुष्य होकर उसे मिटा दिया।

रामायण के मूल स्वर या मूल पाठ की ओर विद्वान् मनीषियों का ध्यान पूर्व में भी जाता रहा है। इस दृष्टि को ध्यान में रखकर अनेक विद्वज्जनों ने अपने ग्रन्थ लिखे हैं और इस पर विचार किया है। महामहोपाध्याय स्वामी भगवदाचार्य ने वाल्मीकि रामायण पर अपनी शोधपूर्ण स्थापनाएँ प्रकाशित की हैं। उनका मानना है कि सीता की अग्निपरीक्षा के समय जो दुर्वाक्य राम के मुख से कहलवाये गये हैं वे वाल्मीकि के चरित्रादर्श से मेल नहीं खाते। किसी स्त्री-निन्दक ने राम और सीता के चरित्र को मलिन-पंकिल करने के उद्देश्य से रामायण के मूल पाठ के साथ यह कुत्सित प्रसंग जोड़ दिया है। अग्निपरीक्षा का राम-सीता-संवाद वाल्मीकि के **चारित्येण च** को युक्तः तत्त्व-दर्शन के साथ न्याय नहीं करता। यहाँ वाल्मीकि अपने लक्ष्य से च्युत प्रतीत होते हैं। **जितक्रोधो द्युतिमान् कोऽनसूयकः** अर्थात् **'क्रोधजयी, उज्ज्वलमना एवं अनिन्दक'** राम की खोज में वे तपोरत थे, वह राम अपनी सती साध्वी पत्नी को ऐसी अभद्रता से दुत्कारे, भगवदाचार्य जी इसे वाल्मीकि की वाणी नहीं मानते। अतः उन्होंने अपनी संशोधित वाल्मीकीय रामायण में से अग्निपरीक्षा का प्रसंग ही निकाल दिया है। तुलसीदास जी ने भी अपने रामचरितमानस में मायावी सीता का ही अग्निपरीक्षण करवाया है, असली सीता तो पहले ही अग्नि में गुप्तवास के लिए चली गई थी। 'मानस' के 'अरण्यकाण्ड' में तुलसी के राम सीता से कहते हैं-

सुनहु प्रिया व्रत रुचिर सुसीला,
मैं कछु करबि ललित नर लीला।
तुम्ह पावक महुं करहु निवासा,
जौं लगि करौं निसाचर नासा।

अध्यात्म रामायण में भी सीता की छाया मूर्ति ने ही अग्नि में प्रवेश किया था। तमिल के महाकवि कम्बन ने भी अपने रामायण महाकाव्य में सीता की अग्निपरीक्षा के प्रसंग को वाल्मीकि के दोष परिहार के ही रूप में व्यक्त किया है। सीता के सतीत्व पर लांछन से वे विचलित हो उठते हैं।

सीता की 'अग्निपरीक्षा' का वर्णन युद्धकाण्ड के सर्ग ११४ से १२० पर्यन्त है। इसके प्रक्षिप्त होने में सबसे प्रमाण यह है कि इस प्रसंग में सीता के प्रति राम के प्रेम में जो सहसा परिवर्तन दिखाया गया है वह अप्रत्याशित ही नहीं सर्वथा अस्वाभाविक भी है। (बुल्के, रामकथा-अनुच्छेद ५६५)। सीता हरण के बाद राम के विरह का बहुत सर्गों में वर्णन किया गया है।

युद्धकाण्ड के प्रारम्भ में स्वयं राम कहते हैं कि मेरा विरह-जनित शोक दिनोंदिन बढ़ता जाता है (सर्ग-५ श्लोक-४२)। लंकावरोध के बाद भी सीता के लिए राम की अभिलाषा- **जगाम मनसा सीता दूयमानेन चेतसा** (४२/७) का वर्णन मिलता है। इन्द्रजित् द्वारा माया सीता के वध का समाचार सुनकर राम मूर्छित होकर गिर पड़ते हैं-

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा राघवः शोक मूर्च्छितः।
निपपात तदा भूमौ छिन्नमूल इव द्रुमः॥ (८३/१०)१

इससे स्पष्ट है कि सीता के प्रति राम का प्रेम अपरिवर्तित बना हुआ था, किन्तु यह सब होते हुए भी रावणवध के पश्चात् आई हुई सीता को देखकर राम के मुख से यह कहा जाना कि मैं अपने शत्रु के प्रति अपमान का प्रतिकार कर चुका हूँ, मुझे तुम्हारे प्रति कोई आकर्षण नहीं रहा। लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, सुग्रीव अथवा विभीषण किसी को अपना पति चुन सकती हो। मुझे तुम्हारे चरित्र पर सन्देह है। राम के इस तथाकथित वक्तव्य से यह निष्कर्ष निकलता है कि उनको सीता के सत्य वचन, जो उसके पतिव्रता होने और राम के प्रति ऐकान्तिक तथा आत्यन्तिक प्रेम के सूचक हैं, पर विश्वास नहीं हैं। पूर्व में सीता के प्रति रावण का वक्तव्य भी स्पष्ट है जिसमें रावण ने सीता को पति के रूप में स्वीकार करने के लिए एक वर्ष का समय दिया था, अन्यथा वह रावण की पाकशाला की सामग्री बन जाएगी (अरण्यकाण्ड, सर्ग-५५)। १० मास

व्यतीत हो जाने पर भी रावण के प्रस्ताव को जब सीता अस्वीकार कर देती है तब रावण क्रुद्ध होकर कहता हैं- निर्धारित अवधि के पूरे होने में २ मास रह गये हैं। यदि तुम इसके बाद भी स्वेच्छा से मेरी पत्नी नही बनोगी तो मेरे रसोइए खण्डशः काटकर मेरे प्रातराश (प्रातः कालीन भोजन) का भाग बना देगें।

द्वाभ्यामूर्ध्वं तु मासाभ्यां भर्त्तारं मामनिच्छन्तीम्।
मम त्वां प्रातराशार्थे सूदाश्छेत्स्यन्ति खण्डशः॥

(सुन्दर६, सर्ग-२२ श्लोक-६)

इससे स्पष्ट है कि रावण सीता का बलात्कार नहीं कर सकता था। ऐसी स्थिति में सीता के चरित्र के प्रति राम के सन्देह का अवसर ही नहीं है और न इस तथाकथित अग्निपरीक्षा की आवश्यकता ही है।

इस तथाकथित अग्निपरीक्षा के बाद राम का यह कथन कि मेरे मन में तो तुम्हारे प्रति सन्देह नहीं था किन्तु जनता की दृष्टि में तुम्हारे इस शुद्धीकरण की आवश्यकता थी। बुल्के के शब्दों में इस प्रकार का दिखावा समस्त मूल वाल्मीकि रामायण की भावधारा के विरुद्ध है। (बुल्के, अनु० ५६५)।

इस प्रकरण (अग्निपरीक्षा) का प्रक्षेप अवतारवाद के स्वीकार होने के बाद ही सम्भव हो पाया है। क्योंकि आगे लिखा है कि राम को वास्तविक दुःख नहीं है वे तो नर-लीला कर रहे हैं। राम और सीता दोनों क्रमशः विष्णु और लक्ष्मी के अवतार हैं। ब्रह्मा आदि देवता राम को विष्णु तथा सीता को लक्ष्मी का अवतार मानकर उनकी स्तुति कर रहे हैं। वाल्मीकि रामायण का यह एक मात्र स्थल हैं जहाँ सीता तथा लक्ष्मी की अभिन्नता का प्रतिपादन किया गया है (युद्धकाण्ड-११७/२७)

इस प्रसंग के प्रक्षिप्त होने के कुछ और भी कारण हैं-

१. युद्धकाण्ड के १२४ सर्ग में भारद्वाज ने तपोबल से रामकथा जानकर उसका जो वर्णन किया, उसमें यह प्रसंग नहीं है। इसी प्रकार १२६ सर्ग में हनुमान भरत को जो कथा सुनाते हैं, उसमें भी अग्निपरीक्षा का उल्लेख नहीं है।

२. बालकाण्ड के सर्ग-१ और सर्ग-३ में रामकथा की संक्षिप्त अनुक्रमणिका दी गई है। सर्ग-१ वाली सूची में अग्निपरीक्षा है, सर्ग-३ वाली सूची में नहीं है। फादर कामिल बुल्के का कहना है कि दोनों अनुक्रमणिकाओं (सर्ग-१ और सर्ग-३) का प्रामाणिक संस्करण अग्निपरीक्षा के विषय में मौन है। (बुल्के, रामकथा, पृ.-४२५, संस्करण-२००४ ई.)।

३. उत्तरकाण्ड भी अग्निपरीक्षा के विषय में कुछ नहीं कहता। २ (दो) स्थलों पर राम सीता की निर्दोषता के प्रमाण का उल्लेख करते हैं। प्रथम बार सीता-त्याग के समय वह केवल देवताओं के साक्ष्य की चर्चा करते हैं। दूसरी बार वह वाल्मीकि से कहते हैं कि मैंने लंका निवास के बाद सीता को तभी ग्रहण किया जब उन्होंने अपने सतीत्व की शपथ खायी थी।

प्रत्ययश्च पुरा वृत्तो वैदेह्याः सुसंनिधौ।
शपथश्च शतस्तत्र तेन वेश्म प्रवेशिता॥

(सर्ग-९७, श्लोक-३)

यदि इस सर्ग के रचनाकाल में अग्निपरीक्षा का वृत्तान्त प्रचलित होता तो यहाँ पर राम द्वारा अवश्य ही सीता के सतीत्व के सबसे महत्त्वपूर्ण प्रमाण का उल्लेख हुआ होता। अतः यह मानना पड़ेगा कि उत्तरकाण्ड की आधिकारिक कथावस्तु के लिपिबद्ध होने के पश्चात् ही अग्निपरीक्षा-विषयक प्रक्षेप युद्धकाण्ड का अंश बन गया है।

४. महाभारत के रामोपाख्यान से भी इस निर्णय (अर्थात् सीता की अग्निपरीक्षा की प्रक्षिप्तता) की पुष्टि होती है। रामायण के इस प्राचीनतम संक्षेप में कहीं भी अग्निपरीक्षा का निर्देश मात्र भी नहीं मिलता।

अग्निपरीक्षा के बाद के दो सर्ग (११९-१२०) भी अनावश्यक हैं और पूरी तरह प्रक्षिप्त हैं। इनमें शिव राम की स्तुति करते हैं, स्वर्ग से राजा दशरथ भी दिखाई देते हैं तथा इन्द्र राम का निवेदन स्वीकार कर मृत वानर-सैनिकों को जीवित कर देते हैं।

क्रमशः ...

लेखक- डॉ. ज्वलन्तकुमार शास्त्री
चलभाष- 7303474301

मिट्टी की मुट्ठी में आजादी का सपना

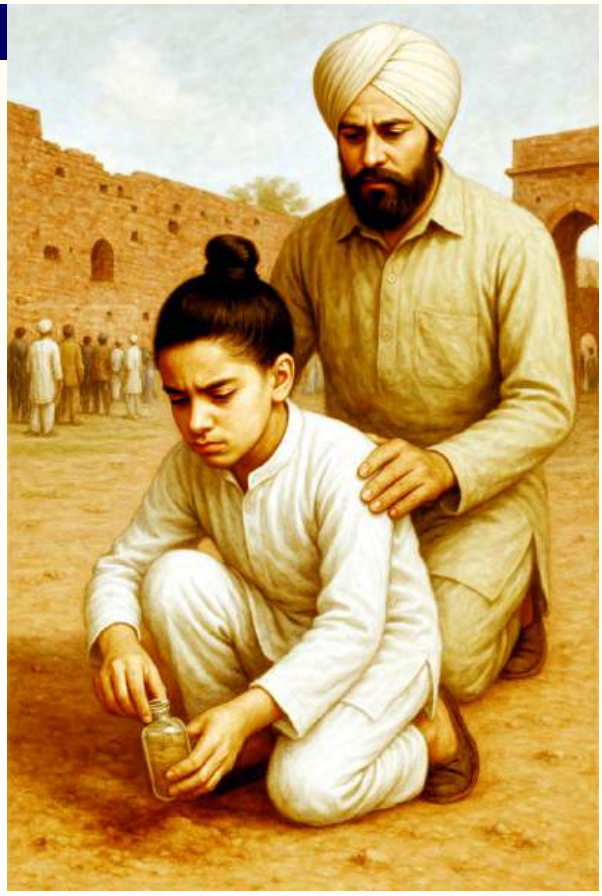

कुछ नाम इतिहास के पन्नों में दर्ज होकर नहीं बल्कि लोगों के दिलों में एक आदर्श बनकर बस जाते हैं। भगत सिंह ऐसे ही एक महान् क्रान्तिकारी थे जिनका जीवन एक तूफान था। जिसने अपने समय के सोए हुए लोगों को जगा दिया। उनका हर कदम एक किस्सा था हर किस्सा एक शिक्षा।

भगत सिंह का जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ था जहाँ देशभक्ति खून में थी। उनका जन्म २८ सितम्बर १९०७ को हुआ था और यह वही दिन था जब उनके पिता और चाचा जेल से रिहा हुए थे। उनके घर में आर्य समाज और स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचारों का गहरा प्रभाव था। जिसने उन्हें बचपन से ही तर्क, निडरता और अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने की प्रेरणा दी। उनके बचपन का एक किस्सा उनके क्रान्तिकारी विचारों को दर्शाता है- एक दिन उनके पिता उन्हें अपने दोस्त के खेत में ले गए जब दोस्त ने मजाक में पूछा 'यह लड़का क्या करेगा' तो नन्हे भगत सिंह ने जमीन पर कुछ तिनके बोना शुरू कर दिया और अपनी मासूम आँखों में चमक के साथ कहा मैं बन्दूकें उगा रहा हूँ ताकि हम अंग्रेजों को देश से भगा सकें।

यह बचपन की मासूमियत ही उनके जीवन का आधार बनी। १३ अप्रैल १९१९ को जब जलियांवाला बाग में हुए खूनी काण्ड ने उनके भीतर की चिंगारी को बदले की आग में बदल दिया। १२ साल की उम्र में जब उन्होंने इस घटना के बारे में सुना तो वह मीलों चलकर उस जगह पर गए। वहाँ की खून से सनी मिट्टी को उन्होंने एक शीशी में भरा और उसे अपने पास रखा। यह मिट्टी उनके लिए सिर्फ मिट्टी नहीं बल्कि देश के शहीदों के बलिदान का प्रतीक बन गया। जिसने उन्हें हमेशा अपने मकसद की याद दिलाई। बदले की आग और क्रान्ति का रास्ता उनका जीवन पाथेय बन गया। इसी आग और प्रतिज्ञा के चलते जब १९२८ में साइमन कमीशन के विरोध के दौरान लाला लाजपत राय पर पुलिस की लाठीचार्ज हुई और उनकी मृत्यु हो गई तब भगत सिंह और उनके साथियों को बहुत गहरी चोट पहुँची। उन्होंने इसका बदला लेने का प्रण लिया और १७ दिसम्बर १९२८ को पुलिस अफसर जॉन सांडर्स को गोली मार दी। यह घटना सिर्फ एक बदला नहीं थी बल्कि यह अंग्रेजों को एक स्पष्ट सन्देश था कि भारतीय अब अत्याचार सहने को तैयार नहीं हैं।

इस घटना के बाद भगत सिंह ने अपनी बात को और

अच्छे ढंग से जनता तक पहुँचाने का रास्ता चुना। उन्होंने ८ अप्रैल १९२९ को अपने साथी बटुकेश्वर दत्त के साथ मिलकर दिल्ली की सेन्ट्रल असेंबली में बम फेंका। यह बम किसी को नुकसान पहुँचाने के लिए नहीं बल्कि बहरी अंग्रेज सरकार को जगाने के लिए था। बम फेंकने के बाद वे भागे नहीं बल्कि 'इंकलाब जिन्दाबाद' के नारे लगाते हुए अपनी गिरफ्तारी दी, ताकि वे अदालत के माध्यम से अपने विचारों को सब तक पहुँचा सकें। और जब उन्हें फाँसी की सजा सुनाई गई तो भी उनके चेहरे पर कोई शिकन नहीं थी। वे जानते थे कि उनकी मौत देश के लिए एक नई क्रान्ति की चिंगारी बनेगी। फाँसी से कुछ देर पहले वे लेनिन की जीवनी पढ़ रहे थे। जब एक अधिकारी ने उनसे उनकी आखिरी इच्छा पूछी तो उन्होंने हँसते हुए कहा- 'क्या आप मुझे ये किताब पूरी करने के लिए थोड़ा और समय दे सकते हैं' यह उनका अन्तिम सन्देश था कि एक क्रान्तिकारी के लिए किताबें और विचार उसकी जिन्दगी से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण होते हैं।

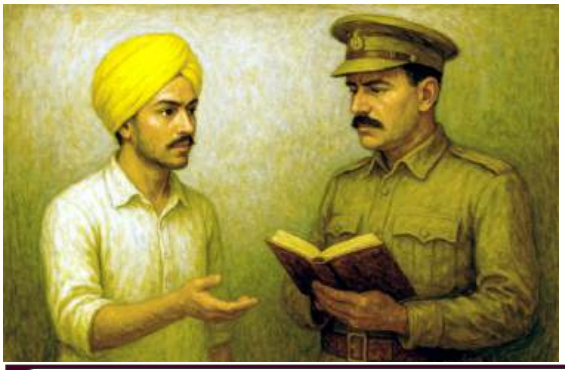

'भगत सिंह का बलिदान सिर्फ एक मौत नहीं बल्कि एक अमर कहानी है जो हमें यह सिखाती है कि किसी भी व्यक्ति का कद उसकी उम्र से नहीं बल्कि उसके विचारों और देश के प्रति उसके समर्पण से मापा जाता है। वह आज भी हमारे दिलों में जिन्दा हैं। हमारे दिल में धड़कते हैं और जब भी कोई अन्याय के खिलाफ आवाज उठाता है तो हमें उनमें भगत सिंह की झलक दिखाई देती है।'

- सिद्धम आर्य
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

डॉ. असित मित्तल की माता उमा रानी जी मित्तल का देहावसान

न्यास को सत्यार्थ मित्र एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करने वाली एवं उदयपुर के आर्य समाजों के प्रत्येक कार्यक्रमों में तन-मन-धन से सहयोग करने वाली डॉ. असित मित्तल की माता जी श्रीमती उमा रानी जी का दिनांक २२ जुलाई २०२५ को देहावसान हो गया।

न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार तथा उदयपुर के सभी आर्यजनों की ओर से परमपिता परमेश्वर से यही प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें एवं परिवारीजनों को इस वेदना को सहन करने तथा उनके द्वारा बताये सन्मार्ग पर चलने की शक्ति व सामर्थ्य प्रदान करें।

दान की अपील

सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थली नवलखा महल से NMCC के रूप में सत्यार्थ शिक्षाओं को जिस अद्भुत प्रकार से प्रसारित किया जा रहा है और सहस्रों लोग आकर्षित हो इसका लाभ ले रहे हैं जिस कारण से यह स्थल अब विख्यात होता जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि इस यज्ञ में अपनी छोटी–बड़ी आहुति अवश्य देने की कृपा करें। इस हेतु साथ में दिए यूपीआई कोड का भी आप इस्तेमाल कर सकते हैं। बस एक अनुरोध है कि अगर आप अर्थ सहयोग प्रदान करें तो चलभाष 9314235101, 7976271159 अथवा 9314535379 पर सूचित अवश्य करें।

G Pay

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

BHIM UPI

आजीवन सत्यार्थ मित्र

सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बन्धु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु.51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा–ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।

भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम अपने विचारों को व्यक्त करते हैं और इसके लिये हम वाचिक ध्वनियों का प्रयोग करते हैं। भाषा मनुष्य के व्यवहार, विचार एवं जीवन जीने का महत्त्वपूर्ण माध्यम है। भाषा आभ्यन्तर अभिव्यक्ति का सर्वाधिक विश्वसनीय माध्यम है। यही नहीं वह हमारे आभ्यन्तर के निर्माण, विकास, हमारी अस्मिता, सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान का भी साधन है। भाषा के बिना मनुष्य सर्वथा अपूर्ण है और अपने इतिहास तथा परम्परा से विच्छिन्न है। विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से प्रमुख 'हिन्दी' भारत की सांस्कृतिक और भाषाई विविधता को एकता के सूत्र में पिरोती है। हिन्दी हमारी आत्मा में बसती है, हिन्दी हमारे संस्कारों में बसती है, हिन्दी हमारी संस्कृति में बसती है और हिन्दी ही हमारी पहचान की बुनियाद है।

हिन्दी जिसके मानकीकृत रूप को मानक हिन्दी कहा जाता है, विश्व की एक प्रमुख भाषा है और भारत की एक राजभाषा है। केन्द्रीय स्तर पर भारत में सह-आधिकारिक भाषा अंग्रेजी है। यह हिन्दुस्तानी भाषा की एक मानकीकृत रूप है जिसमें संस्कृत के तत्सम तथा तद्भव शब्दों का प्रयोग अधिक है और अरबी-फारसी शब्द कम हैं। हिन्दी संवैधानिक रूप से भारत की राजभाषा और भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा नहीं है क्योंकि भारत के संविधान में किसी भी भाषा को ऐसा दर्जा नहीं दिया गया है। एथनोलॉग के अनुसार हिन्दी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, वहीं विश्व आर्थिक मंच की गणना के अनुसार यह विश्व की दस शक्तिशाली भाषाओं में से एक है।

हिन्दी भारतीय संस्कृति की अस्मिता की पहचान है। हिन्दी शब्द का सम्बन्ध संस्कृत शब्द सिंधु से माना जाता है। 'सिंधु' सिंध नदी को कहते थे और उसी आधार पर उसके आस-पास की भूमि को सिन्धु कहने लगे। यह सिंधु शब्द ईरानी में जाकर 'हिन्दू', हिन्दी और फिर 'हिन्द' हो गया। वस्तुतः ईरान की प्राचीन भाषा अवेस्ता में 'स्' ध्वनि नहीं बोली जाती थी। 'स्' को 'ह्' रूप में बोला जाता था। अफगानिस्तान के बाद सिंधु नदी के इस पार हिंदुस्तान के पूरे इलाके को प्राचीन फारसी साहित्य में

भी 'हिन्द', 'हिन्दुश' के नामों से पुकारा गया है तथा यहाँ की किसी भी वस्तु, भाषा, विचार को विशेषण के रूप में 'हिन्दीक' कहा गया है जिसका मतलब है 'हिन्द का'। यही 'हिन्दीक' शब्द अरबी से होता हुआ ग्रीक में 'इन्दिके', 'इन्दिका', लैटिन में 'इन्दिया' तथा अंग्रेजी में 'इण्डिया' बन गया। अरबी एवं फारसी साहित्य में भारत (हिन्द) में बोली जाने वाली भाषाओं के लिए 'ज़बान-ए-हिन्दी', पद का उपयोग हुआ है। भारत आने के बाद अरबी-फारसी बोलने वालों ने 'ज़बान-ए-हिन्दी', 'हिन्दी ज़बान' अथवा 'हिन्दी' का प्रयोग दिल्ली-आगरा के चारों ओर बोली जाने वाली भाषा के अर्थ में किया। भारत के गैर-मुस्लिम लोग तो इस क्षेत्र में बोले जाने वाले भाषा-रूप को 'भाखा' नाम से पुकारते थे, 'हिन्दी' नाम से नहीं। 'देशी', 'भाखा' (भाषा), 'देशना वचन' (विद्यापति), 'हिन्दवी', 'दक्खिनी', 'रेखता', 'आर्यभाषा' (दयानन्द सरस्वती), 'हिन्दुस्तानी', 'खड़ी बोली', 'भारती' आदि हिन्दी के अन्य नाम हैं जो विभिन्न ऐतिहासिक कालखण्डों में एवं विभिन्न सन्दर्भों में प्रयुक्त हुए हैं। हिन्दी, यूरोपीय भाषा-परिवार के अन्दर आती है। ये हिन्द ईरानी शाखा की हिन्द आर्य उपशाखा के अन्तर्गत वर्गीकृत है।

आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं में सर्वाधिक लोकप्रिय हिन्दी भाषा हुई। कबीर की निर्गुण भक्ति एवं भक्ति काल के सूफी-सन्तों ने हिन्दी को काफी समृद्ध किया। कालान्तर में मलिक मुहम्मद जायसी ने पद्मावत और गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस की अवधी में रचना कर हिन्दी को और भी जनप्रिय बनाया। अमीर खुसरो ने इसे 'हिन्दवी' गाया तो हैदराबाद के मुस्लिम शासक कुली कुतुबशाह ने इसे 'जबाने हिन्दी' बताया। स्वतंत्रता तक हिन्दी ने कई पड़ावों को पार किया व दिनों-ब-दिन और भी समृद्ध होती गई। आज संसार भर में लगभग ५००० भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं। उनमें से लगभग १६५२ भाषाएँ व बोलियाँ भारत में सूचीबद्ध की गई हैं जिनमें ६३ भाषाएँ अभारतीय हैं। चूँकि इन १६५२ भाषाओं को बोलने वाले समान अनुपात में नहीं हैं अतः संविधान की आठवीं अनुसूची में १८ भाषाओं को शामिल किया गया जिन्हें देश की कुल जनसंख्या के ६१ प्रतिशत लोग प्रयोग करते हैं। इनमें भी सर्वाधिक ४६ प्रतिशत लोग हिन्दी का प्रयोग करते हैं अतः हिन्दी को भारतीय संविधान के अनुच्छेद ३४३ में राजभाषा को रूप में वरीयता दी गयी। हिन्दी और उर्दू दोनों को मिलाकर हिन्दुस्तानी भाषा कहा जाता है। हिन्दुस्तानी मानकीकृत हिन्दी और मानकीकृत उर्दू के बोलचाल की भाषा है। इसमें शुद्ध संस्कृत और शुद्ध फ़ारसी-अरबी दोनों के शब्द कम होते हैं और तद्भव शब्द अधिक। जिस हिन्दी में अरबी, फ़ारसी और अंग्रेजी के शब्द लगभग पूरी तरह से हटा कर तत्सम शब्दों को ही प्रयोग में लाया जाता है, उसे "शुद्ध हिन्दी" या "मानकीकृत हिन्दी" कहते हैं। आधुनिक हिन्दी का जनक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को माना जाता है। वह हिन्दी गद्य के एक महान् लेखक थे। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने हिन्दी गद्य में विशेष योगदान दिया इसके कारण ही इनको आधुनिक हिन्दी का जनक कहा जाता है। अंग्रेजी काल में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के समय हिन्दी के विकास में एक नयी चेतना आयी। भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के समय महात्मा गाँधी सहित अनेक नेताओं ने भारतीय एकता के लिये हिन्दी के विकास का समर्थन किया। काशी नागरी प्रचारिणी सभा और हिन्दी साहित्य

सम्मेलन, प्रयाग के प्रयासों से हिन्दी को एक नयी ऊँचाई मिली। भारत की स्वतन्त्रता के पश्चात् संविधान निर्माताओं ने हिन्दी को भारत की राजभाषा स्वीकार किया। भारत में १४ सितम्बर १९४९ को हिन्दी देश की राजभाषा बनी। चूँकि हिन्दी को

संविधान सभा ने १४ सितम्बर, १९४९ को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया, इसीलिए भारतवर्ष में प्रत्येक वर्ष १४ सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है। भारत के संविधान में किसी भी भाषा को राष्ट्रीय दर्जा नहीं दिया गया है। अतः भारत की कोई राष्ट्रभाषा नहीं है। भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में २२ भाषाओं की सूची है। अनुच्छेद ३५१, एक निर्देशात्मक आदेश में कहा गया है कि हिन्दी के प्रसार को बढ़ावा देना सरकार का कर्तव्य है।

भारत में १६०० से ज्यादा भाषाएँ और बोलियाँ प्रचलन में हैं, लेकिन इनमें से २२ भाषाओं को ही संवैधानिक दर्जा प्राप्त है। संविधान की आठवीं अनुसूची में २२ भाषाओं का उल्लेख किया गया है। इनमें १९५० में १४ भाषाएँ- हिन्दी, गुजराती, मराठी, कश्मीरी, असमिया, बांग्ला, पंजाबी, उड़िया, संस्कृत, उर्दू, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, और मलयालम इस अनुसूची में शामिल थीं, जबकि १९६७ में सिंधी भाषा को इस अनुसूची में शामिल किया गया। इसी तरह १९९२ में कोंकणी, मणिपुरी, नेपाली और २००३ में बोडो, डोगरी, मैथिली और संथाली इस अनुसूची का हिस्सा बनीं। भारतीय संविधान का अनुच्छेद २९ यह संरक्षण प्रदान करता है कि भारत के नागरिकों के एक हिस्से को अलग भाषा, लिपि या संस्कृति अपनाने का अधिकार है। भारत में हिन्दी सबसे ज्यादा बोले जाने वाली भाषा है। भारत की वर्ष २०११ में हुई जनगणना के आंकड़ों के अनुसार ५७.१% भारतीय जनसंख्या हिन्दी जानती है, जिसमें से ४३.६३% भारतीय लोगों ने हिन्दी को अपनी मूल भाषा या मातृभाषा घोषित किया था। हिन्दी और इसकी बोलियाँ सम्पूर्ण भारत के विविध राज्यों में बोली जाती हैं। इसके अतिरिक्त भारत, पाकिस्तान और अन्य देशों में १४ करोड़ १० लाख लोगों द्वारा बोली जाने वाली उर्दू, व्याकरण के आधार पर हिन्दी के समान है, एवं दोनों ही हिन्दुस्तानी भाषा की परस्पर-सुबोध्य रूप हैं। एक विशाल संख्या में लोग हिन्दी और उर्दू दोनों को ही समझते हैं। भारत में हिन्दी, विभिन्न भारतीय राज्यों की आधिकारिक भाषाओं और क्षेत्र की बोलियों का उपयोग करने वाले लगभग १ अरब लोगों में से अधिकांश की दूसरी भाषा है। हिन्दी भारत में सम्पर्क भाषा का कार्य करती है और कुछ हद तक पूरे भारत में सामान्यतः एक सरल रूप में समझी जानेवाली भाषा है। वर्तमान में हिन्दी में आम बोलचाल और सरकारी कामकाज में इस्तेमाल शब्द-भण्डार पिछले २० वर्षों में ७.५ गुना बढ़ा है। शब्दों की संख्या २०,००० से बढ़ कर १.५ लाख पहुँच चुकी है। ये शब्द उन अनुमानित ६.५ लाख शब्दों की वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के अतिरिक्त हैं, जिनमें कि विज्ञान और मानविकी की सभी शाखाएँ सम्मिलित हैं और इन सबको मिला कर हिन्दी का व्यापक शब्द-भण्डार बनता है। हिन्दी मात्र भाषा ही नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति, सभ्यता और परम्परा की विरासत को अपने में संजोए हमारे सांस्कृतिक गौरव, एकता व अखण्डता की पहचान है, जो अखण्ड राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधती है।

हिन्दी ने कई उतार-चढ़ाव देखे फिर भी हिन्दी देश एवं दुनिया में सतत् आगे बढ़ती जा रही है। आज हिन्दी केवल भारत तक सीमित नहीं है, इसका विस्तार विश्व के तमाम देशों में हो चुका है। जनतांत्रिक आधार पर हिन्दी विश्व भाषा है क्योंकि उसके बोलने-समझने वालों की संख्या संसार में तीसरी है। विश्व के १३२ देशों में जा बसे भारतीय मूल के लगभग २ करोड़ लोग हिन्दी माध्यम से ही अपना कार्य निष्पादित करते हैं। एशियाई संस्कृति में अपनी विशिष्ट भूमिका के कारण हिन्दी एशियाई भाषाओं से अधिक एशिया की प्रतिनिधि भाषा है। विदेशी विश्वविद्यालयों ने इसे एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में अपनाया है। आज १५० से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है। आज हिन्दी भारत ही नहीं बल्कि पाकिस्तान, नेपाल बांग्लादेश, इराक, इंडोनेशिया, इजरायल, ओमान, फिजी, इक्वाडोर, जर्मनी, ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस,

ग्रीस, ग्वाटेमाला, सउदी अरब, पेरू, रूस, कतर, म्यांमार, त्रिनिदाद-टोबैगो, यमन इत्यादि देशों में जहाँ लाखों अनिवासी भारतीय व हिन्दी-भाषी हैं, में भी बोली जाती है। मॉरीशस, त्रिनिदाद-टोबैगो, सूरीनाम, गुयाना, फीजी, द. अफ्रीका जैसे देशों में 'गिरमिटिया' के रूप में गए भारतीय अपनी संस्कृति व हिन्दी को सहेजना चाह रहे हैं। स्पष्ट है कि हिन्दी आज दूसरे देशों में भी अपनी कीर्ति-पताका फहरा रही है। एथ्नोलॉग (२०२२, २५वां संस्करण) की रिपोर्ट के अनुसार विश्वभर में हिन्दी को प्रथम और द्वितीय भाषा के रूप में बोलने वाले लोगों की संख्या के आधार पर हिन्दी विश्व की की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है।

वैश्विक स्तर पर एवं देश में भी हिन्दी का विस्तार काफी हो रहा है लेकिन दूसरी ओर स्कूली शिक्षा से लेकर उच्चतम शिक्षा के स्तर पर हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाएँ सिकुड़ती जा रही हैं। हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषायी माध्यम के विद्यालयों में विद्यार्थियों की संख्या में लगातार गिरावट आ रही है। किसी भी भाषा के संरक्षण हेतु उस भाषा में प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा का उपलब्ध होना एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। महान् वैज्ञानिक डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने भी स्वीकार किया था कि मेरी विद्यालयीन शिक्षा मातृभाषा में हुई इसलिए मैं अच्छा वैज्ञानिक बना हूँ। वैश्विक स्तर पर देखें तो दुनिया के जिन देशों ने अपनी मातृभाषा को प्रोत्साहित किया, वह आज ज्यादा विकसित हैं। देश में शिक्षा व्यवस्था पर वैश्वीकरण के बढ़ते प्रभाव के कारण अब मातृभाषा में शिक्षा की स्थिति कमजोर हो रही है। प्राथमिक शिक्षा में फिर भी हिन्दी या मातृभाषा का विकल्प है किन्तु उच्च शिक्षा में तो अंग्रेजी का कोई विकल्प छात्रों के समक्ष दिखाई नहीं देता है। भाषाई गुलामी किसी भी देश की सांस्कृतिक अस्मिता पर सर्वप्रथम हमला करती है। विश्व में विगत ४० वर्षों में लगभग १५० अध्ययनों के निष्कर्षों की मानें तो शिक्षा मातृभाषा में ही दी जानी चाहिए क्योंकि बालक को माता के गर्भ से ही मातृभाषा के संस्कार प्राप्त होते हैं। ऐसे में शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही होना चाहिए। भारत में १९६८ में लागू राष्ट्रीय शिक्षा नीति से लेकर २०२० में जारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति तक में भाषाओं विशेषकर मातृभाषा के संरक्षण की बात कही गई है। भारत में भाषाओं की विविधता इसे एक वैशिष्ट्य प्रदान करती है। त्रिभाषा फॉर्मूला के पीछे आरम्भ से ही यही अवधारणा रही है कि मातृभाषा का ज्ञान सांस्कृतिक समन्वय कराएगा, हिन्दी राष्ट्रीय समन्वय कराएगी और अंग्रेजी लोगों को वैश्विक स्तर पर जोड़ेगी। लेकिन दुर्भाग्यवश अंग्रेजी को हमने इतनी वरीयता दे दी कि मातृभाषाएँ और हिन्दी काफी पीछे छूट गईं।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हिन्दी राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोने वाली तथा विभिन्न संस्कृतियों, विधाओं और कलाओं की त्रिवेणी है, जिसके साहित्य में समाज की विविधता, जीवन दृष्टि और लोक कलाएँ संरक्षित हैं। इसके लिए जरुरी है कि हम हिन्दी को लेकर अपने अन्दर से किसी भी प्रकार की हीनता का त्याग करें। हिन्दी गर्व और गौरव की भाषा है। विश्व की समृद्धतम भाषाओं में अग्रणी हिन्दी हमारी राष्ट्रीय एकता की प्रतीक है। यह हमें विविधता में एकत्व का बोध कराती है। अपनी भाषा बोलने और लिखने में संकोच का अनुभव न करें। अपनी भाषा बोलने से हमारा सम्मान बढ़ता है। दूसरों से आशा करने की बजाय खुद से और अपने घर से शुरुआत करें। आइए, हम सब अपने लेखन एवं वार्तालाप में अपनी मातृभाषा हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करने का संकल्प करें, तभी हिन्दी सर्वव्यापी होगी।

- आकांक्षा यादव
पोस्टमास्टर जनरल आवास
बंगला नं.-22. कैंटोनमेंट, शाही बाग,
अहमदाबाद (गुजरात)-380004, मो.-09413666599
ई-मेल: akankshay1982@gmail.com

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रुप से अनुगृहीत होऊँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक– अशोक आर्य, अध्यक्ष–न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण : AC. No. : 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001 में जमा करा कृपया सूचित करें।

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री वेलजी धनजी भाई; महाराष्ट्र, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर, श्री मानसिंह चौहान; डूंगरपुर, श्री अजय कुमार गोयल; पानीपत, श्री रामजीवन मिश्र; जयपुर, श्रीमती ममता आर्या; नई दिल्ली, श्री यश आर्य; कोलकाता, श्रीमती संचिता जैन; उदयपुर, श्रीमती कुसुम गुप्ता; सूरत, डॉ. बी.पी. भटनागर; उदयपुर, डॉ. अवन्त कुमार सचेती; उदयपुर, श्री अरुण अब्रोल; मुम्बई

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती ने अनेकों बार विष पीकर भी संसार को वेदों का संदेश दिया। उनके शिष्य पंडित लेखराम ने भी संसार के उपकार के लिए अपने पेट में छुरा खाए।

क्रांतिकारी संत स्वामी श्रद्धानंद जी अपने बलिदान से धर्म बगीचा सींचते रहे। आर्य समाज के नेतृत्व में जन-जन को सुख पहुंचाने के लिए अनगिनत महापुरुष पुरुषार्थ करते रहे। आज डेढ़ सौ वर्ष आर्य समाज के होने के बाद भी आर्य वीरों की परंपरा में बलिदानी पुट समाहित है।

आर्य समाज की स्थापना से पूर्व वेदों का नाम नाम ही शेष रह गया था। वेद की चर्चा बन्द सी थी। आर्य समाज के प्रचार के साथ वेदों की चर्चा जोर शोर से चल पड़ी है। आर्य समाजी पण्डितों ने वेदों पर कई भाष्य तथा टीकायें लिखी हैं। वेद सम्बन्धी पुस्तकों की संख्या अत्यधिक है ।

पीड़ितों की सेवा : उपकार के कार्य में भी इस समय तक कोई दूसरी संस्था आर्यसमाज की तुलना में टिक नहीं सकती। कहीं दुष्काल पड़े, भूकम्प आये आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता वहाँ जा पहुँचते हैं तथा ऐसे अवसर पर हिन्दू-मुस्लिम का भेदभाव नहीं किया जाता ।

विद्या की वृद्धि : इस क्षेत्र में जितना कार्य आर्यसमाज ने किया है और किसी संस्था ने नहीं किया है। इसलिये आर्यसमाज सुशिक्षित लोगों की संस्था कहलाती है।

दलितोद्धार : भारतवर्ष में अस्पृश्य माने गये वर्ग की जो सेवा आर्यसमाज ने की है वह अपने आप में एक उदाहरण है। इस क्षेत्र में सेवा करते हुए इसे अपने कई अनमोल रत्नों का बलिदान देना पड़ा फिर भी सेवा और परोपकार के क्षेत्र में आर्यों ने पग पीछे नहीं हटाया।

स्त्रियों को सम्मान दिलाया स्त्रियों को घृणा की दृष्टि से देखा जाता था। स्त्री को पैर की जूती समझा जाता था। आज स्त्रियों को सम्मान का उच्च स्थान प्राप्त है। इसमें आर्यसमाज का सर्वाधिक योगदान है।

आर्यसमाज ने स्त्री शिक्षा का कार्य तब आरम्भ किया जब इसका नाम तक लेना पाप माना जाता था। इस कार्य को करते हुए आर्यों का यत्र-तत्र सामाजिक बहिष्कार किया गया। आर्यों को कई प्रकार की यातनायें दी गईं परन्तु आर्यसमाजी इस कार्य को करते हुए आगे ही आगे बढ़ते गये।

अनाथ रक्षा : अनाथों की रक्षा, शिक्षा एवं पालन-पोषण की ओर आर्यसमाज ने ही सर्वप्रथम ध्यान दिया। आर्य अनाथालयों की प्रबन्ध व्यवस्था दूसरों के लिए एक उदाहरण रही है।

द्वार खुले हैं : आर्यसमाज सार्वभौमिक आर्य धर्म का प्रचार करता है। इसलिए इसके द्वार सबके लिए समान रूप से खुले हैं। कोई किसी जाति का हो, किसी देश का व्यक्ति हो आर्य समाज के नियमों तथा सिद्धान्तों को माननेवाला इसका सभासद बन सकता है।

इस प्रकार से सैंकड़ों और कार्य हैं जिनसे आर्यसमाज की सफलता की परीक्षा की जा सकती है। इस परीक्षा के आधार पर हम बिना झिझक कह सकते हैं कि आर्यसमाज अपने मिशन में सफल हो रहा है। हाँ! यह ठीक है कि अभी तक अपने मिशन के कई कार्यों को आर्य समाज ने आरम्भ ही नहीं किया। यदि सज्जन लोग बहुत बड़ी संख्या में आर्यसमाज में सम्मिलित होकर इन कार्यों को हाथ में लें तो अति शीघ्र धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीति सुधार होकर संसार का बड़ा उपकार हो। इसलिए मेरा संसार का उपकार करनेवाले सभी सज्जनों से निवेदन है कि वे सब इस परोपकारक समाज में सम्मिलित हों ताकि संसार का उपकार सर्व सामर्थ्य से किया जावे तथा संसार को वर्तमान विपत्तियों से बचाया जाय।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्य का पूर्ण प्रकाश प्राप्त किया और अपने हाथ से सत्य की कुंजी लेकर वेद मतों के लुप्त-गुप्त ताले खोले। ऋषि ने वेदों का भाष्य अपनी आत्मा से प्राप्त ईश्वरीय प्रकाश में और प्राचीन ऋषियों के ग्रन्थों के आधार पर किया तथा संसार को यह सिद्ध करके दिखाया कि वेद की शिक्षाएँ कितनी उच्च व पवित्र हैं। स्वामी दयानन्द ने उस मलवे, कूड़ा-करकट को हटाने का आश्चर्यजनक कार्य किया, जिसने वेद ज्ञान के आलोक को लुका-छिपा रखा था। अपनी गगनभेद सिंह गर्जना करके, अपनी ओजस्वी व्यक्तित्व कला से उन्होंने उन सब बुराइयों का खण्डन किया, जिनमें उनकी जाति फंसी धंसी थी।

उस ऋषि का जितना भी यशोगान करें, थोड़ा है। हम सबका प्रथम कर्त्तव्य है कि जो वस्तु आपको स्वामी दयानन्द से बपौती में प्राप्त हुई है उसे अपना तन, मन और धन लगाकर बनाएँ रखे तथा वेद प्रचार को गति प्रदान करें।

आओ संस्कृत, संस्कृति, संस्कार एवं देश धर्म की रक्षा के लिए आर्य समाज को सहयोग प्रदान करें। आर्य समाज के लक्ष्य को जीवन का लक्ष्य घोषित करें। अपने आप को सगर्व आर्य समाजी घोषित करें। वीरों के रक्तिम इतिहास मिटने ना पाए इसके लिए अपने आप को हमेशा जागरूक रखो। संध्या, स्वाध्याय, सत्संग से अपने जीवन को पूर्ण पवित्र एवं बलवान बनाते रहो। यही धर्म की रक्षा का मूल मंत्र है।

(सन्दर्भ ग्रन्थ- आर्य समाज से परिचय, प्रो उमाकांत उपाध्याय, कोलकाता)

आर्योपदेशक, पटना (बिहार), चलभाष- 7717766151

देवपूजा का माध्यम यज्ञ है

गतांक से आगे .....

सनातन संस्कृति में देवपूजा का बड़ा महत्व है। देवताओं को हम प्रसन्न करना चाहते हैं, उन्हें खिलाना चाहते हैं। यह अच्छा है, ऐसा होना भी चाहिए। परन्तु खिलाने का हमारा ढ़ंग जो होना चाहिए उस प्रकार से हम नहीं खिला पाते। हम किसी चित्र या मूर्ति के सामने कुछ वस्तु रख देते हैं यह मानकर कि देवताओं को भोग लग जाये, पहले देवता उसमें से कुछ खा लें, फिर हम खायें। क्या आज तक हमारे द्वारा किसी देवी-देवता की मूर्ति या चित्र के समक्ष रखी मिठाई में से थोड़ी सी भी मिठाई किसी देवता ने खाई है? या किसी देवी-देवता के सामने फोड़े गये नारियल में से उन्होंने कुछ खा लिया हो? ऐसा कभी नहीं हुआ, वे कभी नहीं खा सकते क्योंकि वे जड़ हैं। हमने जड़ वस्तुओं से उनका चित्र या मूर्ति बनाई है। कोई भी जड़ वस्तु कुछ स्वतः ग्रहण नहीं कर सकती यह वैज्ञानिक सत्य है। देवी-देवताओं के नाम पर होता तो यह है कि हम देवी-देवताओं की प्रतिमा या चित्र के सामने कुछ देर के लिए सामग्री रखकर फिर उठा लाते हैं और फिर प्रसाद मानकर हम ही सब उसे खा लेते हैं। देवी-देवता के नाम पर मिठाई, नारियल, बकरा, मुर्गा, भैंसा, शराब, न जाने क्या-क्या प्रसाद के रूप में भक्त खा रहे हैं, और नाम देवता को चढ़ाने का हो रहा है। क्या यही सही ढंग है? देवताओं की इससे तृप्ति हो रही है ? आपके दिए गए पदार्थ को देवता ग्रहण कर रहे हैं? इन प्रश्नों पर थोड़ा सोचिये, चिन्तन करिये कि क्या ऐसा खिलाना सही अर्थों में खिलाना है या मन समझाने के लिए कल्पनाओं में यह सब हुआ। यह वैसा ही है जैसे किसी अतिथि को भोजन करवाने हेतु आमन्त्रित किया, उसे सम्मान के साथ आसन पर बैठा दिया, उसके सामने भोजन की थाली रख दी अतिथि ने उसमें से कुछ खाया ही नहीं और थोड़ी देर में वापिस उठा ली। किन्तु हम कह रहे हैं अतिथि सत्कार हमने कर दिया। कोरी कल्पना मानकर मन को समझाना बाल बुद्धि जैसा ही महत्वहीन कर्म है। यदि कल्पना से ही सब हो जाता है तो बालू रेती को शक्कर समझकर हलवे में डाल दें, फिर उसे खावें। किन्तु वह खाया नहीं जा सकता, यथार्थता और कल्पना अलग-अलग हैं। कल्पना का कोई परिणाम नहीं होता, उसका कोई लाभ नहीं होता, यथार्थता ही परिणाम देती है। इसलिये जड़ अथवा चैतन्य देवी देवताओं को खिलाने का तरीका उनका मुख है। मुख से ही खाया जा सकता है। देवताओं को तृप्त करने के लिए शास्त्रों में देवताओं का मुख अग्नि बताया है, कहा गया **'अग्निर्वै देवानां मुखम्'** अर्थात् अग्नि देवताओं का मुख है।

पहले हमारे परिवारों में भोजन बनने पर पहले अग्नि को जिमाते थे। फिर घर के व्यक्ति खाते थे। यह

अग्नि जिमाना बलिवैश्व यज्ञ कहलाता है। हमारे सनातन धर्म के महान् ग्रन्थ परमात्मा की वाणी वेद में कहा **'उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवान् यज्ञेन बोधय'** उठो और यज्ञ से देवताओं को पहचानो। इसलिए देवाताओं को तृप्त करने, उन्हें प्रसन्न रखने का माध्यम संसार में केवल-केवल यज्ञ ही है। इस समस्त संसार की नाभि यज्ञ है हमारे शरीर में नाभि का बहुत महत्व है। यदि नाभि चक्र थोड़ा भी इधर-उधर हो जावे तो पूरा शरीर अव्यवस्थित हो जाता है। पूरे शरीर को व्यवस्थित और स्वस्थ रखने के लिए नाभि व्यवस्थित होनी चाहिए। ठीक इसी प्रकार पूरे विश्व की नाभि यज्ञ को बताया गया है। कहा गया **'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः'** अर्थात् यज्ञ समस्त संसार की नाभि है। ऐसा क्यों कहा गया, इसे समझिये। -

यज्ञ बाहरी और आन्तरिक पवित्रता करता है, यज्ञ से प्रदूषण दूर होता है, यह विचार मात्र कल्पना या धार्मिक ग्रन्थों तक सीमित नहीं है। इस देश में अनेकों स्थानों पर प्रदूषण देखने की वैज्ञानिक तकनीक से मशीनों द्वारा जाँच कर सिद्ध हुआ है। केवल भारत ही नहीं विश्व के कई अन्य देशों ने यज्ञ करते हुए प्रदूषण मुक्त स्थलों का परिक्षण किया है। यज्ञ का धूम वायु, पानी, वनस्पति को आरोग्य और पुष्टि प्रदान करता है। यहाँ एक घटना की सत्यता से अवगत कराना उक्त कथनों की पुष्टि करता है। कुछ वर्ष पूर्व भोपाल में गैस काण्ड हुआ जिससे हजारों व्यक्ति प्रभावित हुए। जब फैक्ट्री से गैस का रिसन हो रहा था, नागरिकों की आँखों और शरीर पर प्रभाव हो रहा था उस समय हजारों व्यक्ति घर छोड़-छोड़ कर भाग रहे थे। किन्तु वहीं राठौर परिवार जिनका निवास भी उसी गैस प्रभावित क्षेत्र में था वे घर से कहीं नहीं गये। वे नित्य हवन करते थे, यज्ञ का सामान उनके यहाँ था ही, उन्होंने शीघ्रता से घर के दरवाजे, खिड़की बन्द किये और यज्ञ करना प्रारम्भ कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि उनके परिवार पर जहरीली गैस का कोई प्रभाव नहीं हुआ। यह कोई जादू टोना नहीं था, यज्ञ से उत्पन्न धूम व बनी गैस का प्रभाव था। ऐसा प्रयोग कुछ साल पहले गुजरात (सूरत) और महाराष्ट्र (बीड) के क्षेत्र में प्लेग के दुष्प्रभाव को कम करने के लिए भी किया गया। **क्रमशः .....**

- प्रकाश आर्य
प्रधान- आर्य प्रतिनिधि सभा (मध्यभारत)
महू (म. प्र.)

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है-

सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ के कवर पर दिया जावेगा।

1000 प्रतियों के प्रकाशन हेतु 25000 रुपये का दान देने का श्रम करें। 10 प्रतियाँ निशुल्क आपके पास भेजी जाएँगी।

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक 310102010041518, IFSC-UBIN 0531014 में जमा कर सूचित करें।

अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास | भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास | डॉ. अमृत लाल तापड़िया, संयुक्तमंत्री-न्यास

श्वास रोग एवं उसकी आयुर्वेदिक चिकित्सा

वर्तमान समय में विकृत जीवन शैली, विकृत आहार-विहार एवं वायु प्रदूषण के कारण श्वास रोग बहुतायत में पाया जाता है। इसी को दमा या ब्रॉकियल अस्थमा भी कहते हैं। इस व्याधि में रोगी को श्वास लेने में श्रम व कठिनाई होती है व छोड़ने में जोर लगाना पड़ता है तथा भारी कष्ट का अनुभव होता है। जीवन के लिए सर्वाधिक आवश्यक क्रिया श्वास लेना व छोड़ना ही है, इस रोग में इसी क्रिया में बाधा पड़ती है। थोड़ी सी मेहनत करने, तेज चलने या व्यायाम करने पर दम फूलना, मुँह खोलकर जोर-जोर से श्वास लेना इस रोग के प्रारम्भिक लक्षण हैं।

कारण- बचपन में बार-बार न्यूमोनिया रोग का होना, प्रायः खांसी जुकाम से पीड़ित होते रहना,

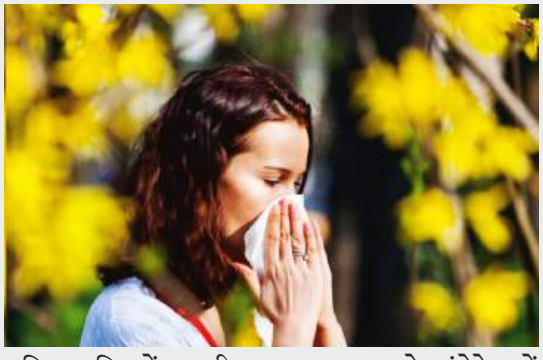

मलिन बस्तियों या सीलनयुक्त घुटन भरे अंधेरे घरों में रहना, सीमेन्ट, पत्थर, ऊन, कपास तथा नायलोन के कारखानों में काम करना, कोयले की खदान में काम करना, अनेक रासायनिक गैसों के सम्पर्क में रहना, धूएँ व धूल में रहना, बर्फबारी, बरसाती हवा, बसन्त ऋतु में कफवर्धक शीतल पदार्थों का सेवन, धूम्रपान, व्यसन, अनूर्जता (एलर्जी), माता-पिता दोनों या किसी एक का श्वास रोग से ग्रस्त होना, कफ और वातवर्धक द्रव्यों का अत्यधिक सेवन आदि अनेक कारणों से श्वास रोग होने की सम्भावना रहती है। यह एक बहुत कष्टदायक व्याधि है। जब दूषित कफ से श्वसन-संस्थान के स्रोतसों में अवरोध होने से, प्राणवायु के आवागमन में अवरोध होता है तब श्वास रोग हो जाता है।

भेद- प्राचीन आचार्यों ने श्वास रोग के ५ भेद बताये हैं। १. महाश्वास २. उर्ध्वश्वास ३. छिन्न श्वास ४. तमक श्वास ५. क्षुद्र श्वास।

प्रायोगिक रूप में अधिकांश रोगी क्षुद्र श्वास व तमक श्वास के ही मिलते हैं। अतः इनकी चिकित्सा का ही वर्णन किया जा रहा है।

क्षुद्र श्वास- यह रोग खूब देखने में आता है, कभी भी किसी को भी हो सकता है और बिना प्रयास मिट भी जाता है। महर्षि चरक के अनुसार रूक्ष अन्नपान, अधिक व्यायाम, परिश्रम, अन्य रोगों के लक्षण के रूप में, दुर्व्यसन, धातुक्षयजन्य दौर्बल्य आदि कारणों से वायु का प्रकोप होकर वायु की उर्ध्वगति होने से क्षुद्र श्वास होता है। इसमें केवल श्वास-प्रश्वास का वेग बढ़ता है अतः अधिक दुःखदायी नहीं होता और कारणों के छोड़ने पर मिट जाता है।

तमक श्वास- अधिकतर इस श्वास के रोगी ही चिकित्सकों के पास जाते हैं। इसमें कण्ठ और मस्तिष्क में जकड़ाहट, श्लेष्मवृद्धि से दुष्ट प्रतिश्याय और वक्ष व फुफ्फुस कफपूर्ण होता है। आँखों के सामने अँधेरा छाना, प्यास, तेज खांसी,

निष्चेष्टा, मूर्च्छा जैसी स्थिति, कफ का अत्यन्त कष्ट से बाहर निकलना, कफ निकलने पर शान्ति, गले की नाड़ियों में खिंचाव, बोलने में असमर्थता, लेटने पर कष्ट व घबराहट, बैठने पर कुछ आराम महसूस होता है अतः श्वास के वेग के समय रोगी सो नहीं पाता। नेत्र ऊँचे व शोथयुक्त, माथे पर पसीना, गर्म खान-पान की इच्छा होना, मुखशोध, अरुचि, शरीर थरथराना आदि के लक्षण होते हैं। बादल, वर्षा, पूर्वी हवा व शीतकाल में तथा कफकारक, शीत वीर्य, मधुर, गुरु भोजन से तमक श्वास बढ़ता है। इसका रोगी शीघ्र नहीं मरता वह बहुत समय तक दुःख पाता है।

चिकित्सा- यह रोग आयुर्वेदिक चिकित्सा से ही जड़ से खत्म हो सकता है। यद्यपि रोगी की प्रकृति, रोग की तीव्रता, रोगी के बलाबल के अनुसार, चिकित्सा के व्यवस्था-पत्र में परिवर्तन करना पड़ता है फिर भी निम्नलिखित व्यवस्था-पत्र से अधिकतर रोगियों में बहुत अच्छा लाभ होते देखा गया है। विशेष स्थिति में अपने आयुर्वेद चिकित्सक से सलाह लेवें।

१. श्वास कुठार रस २०० मि. ग्रा., चौसठ प्रहरी पीपल ५०० मि. ग्रा., प्रवाल पिष्टी ५०० मि.ग्रा., अभ्रक भस्म शतपुटी २०० मि. ग्रा., मल्ल चन्द्रोदय ५० मि ग्रा.। ऐसी एक-एक मात्रा सुबह-शाम अदरक के रस व शहद में मिलाकर चटावें तथा ऊपर से भारंग्यादि कषाय १५-१५ मित्र ली. बराबर गर्म जल मिलाकर पिलायें।

२. भोजन के बाद कनकासव १५ मि. ली. +वासासव १५ मि. ली.+ द्राक्षासव १५ मि. ली.। ऐसी एक-एक मात्रा बराबर गर्म मिलाकर भोजनोत्तर पिलावें।

३. सैंधन लवण को पुराने घी या कच्ची धाणी के शुद्ध सरसों के तेल में मिलाकर ग्रीवा, बगल व छाती पर मालिश करके सेक करें।

४. रोगी अगर दुर्बल हो तो स्वर्णवसन्त मालती रस २५ मि. ग्रा. व च्यवनप्राश १ चम्मच सुबह-शाम देवें।

५. मृदुविरेचन के लिए सोते समय १० से १५ बीज रहित मुनक्का (द्राक्ष) खिलाकर ऊपर से अदरक डाल कर गर्म किया हुआ दूध आवश्यतानुसार पिलावें।

पथ्य- प्राणायाम, हल्का व्यायाम, मृदु विरेचन, वमन, स्वेदन, पुराने सांठी चावल, कुलथी, गेहूँ, जौ, सरसों का तेल, छोटी पीपल डालकर बनाई मूंग की दाल व जुश, दलिया, हींग, शहद, अंगूर, मुनक्का, किशमिश, आंवला, बादाम, बेल, गर्म पानी, गाय व बकरी का दूध, हरड़, परवल, बैंगन, मेथी, बथुआ, चौलाई पालक, लहसुन, रखजूर, सेवफल, अनार, सौंठ, इलायची, काली मिर्च, पीपल तथा गोमूत्र श्वास रोगियों के लिए पथ्य हैं।

अपथ्य- भीण्डी, अरबी, रतालू, जमीकन्द, कमलनाल आदि कफवर्धक सब्जियाँ, गुरु, अति

स्निग्ध वात व कफवर्धक आहार, दही, सलाद, ठण्डी हवायें, खुले आसमान तले सोना, भोजन के बाद दिन में सोना, ठण्डे पानी से स्नान व पीना, मावें की मिठाइयाँ, अधिक गुड़, चीनी, मुरब्बे, शरबत, वर्षा में भींगना, आँधी, तूफान, धुँआ व उड़ती धूल के वातावरण में रहना अपथ्य हैं। धूम्रपान व तम्बाकू का दृढ़ता से परित्याग करें। रात्रि में हल्का व कम भोजन करें।

लेखक- वेदमित्र आर्य
सेवानिवृत्त आयुर्वेदिक चिकित्सक
१३ श्री राम नगर, से.-६, हिरणमगरी, उदयपुर

कहानी दयानन्द की

गतांक से आगे .....

कथा सरित

प्रिय पाठकगण! तनिक सोच करके देखें कि आज जब हम किसी को सत्य बात बताने की कोशिश करते हैं और वह उसको ना माने बल्कि बार-बार असत्य सिद्ध करने की कोशिश करे तो हमें कितना क्रोध आता है। परन्तु महर्षि देव दयानन्द सरस्वती की क्या बात कहें। जिनकी भलाई के लिए, जिनके उद्धार के लिए वह सत्य को लेकर के उपस्थित हुए थे उसको प्रस्तुत करने पर उन्हीं लोगों ने स्वामी जी के साथ क्या-क्या नहीं किया। उनके जैसा वेदों का विद्वान् उस समय भूतल पर नहीं था, परन्तु जिन लोगों को वेद का क,ख,ग नहीं आता था वे वेद के नाम पर अपने असत्य को सत्य में परिवर्तित करना चाहते थे, इसके लिए हुड़दंग, दबंगई और ऋषि पर शारीरिक आक्रमण तक से नहीं चूकते थे।

कवि ने सत्य ही लिखा-

पिलाए जहर के प्याले उन्हीं नादान लोगों ने,
कि वे जिनके लिए अमृत का प्याला लेकर आए थे।
दयानन्द देव वेदों का उजाला लेकर आए थे।।

काशी शास्त्रार्थ में यही तो हुआ था। दुःख की बात यह है कि पंडितों के साथ उस समय के जो श्रीमंत लोग थे वह भी सम्मिलित हो जाते थे। काशी शास्त्रार्थ में महाराजा ईश्वरी नारायण सिंह पक्षपात रहित न थे। जब उन्हें लगा कि बनारस के पंडित स्वामी दयानन्द को जीत नहीं पाएँगे तो शास्त्रार्थ के एक मोड़ पर उन्होंने खड़े होकर ताली बजाकर ऐसा सन्देश दिया कि जैसे दयानन्द हार गए और काशी के पंडित और गुंडे इस नाद को गुंजाने लगे।

लखनऊ में उसकी पुनरावृत्ति हुई। वहाँ के एक रईस लाला गजाधर प्रसाद के अनुरोध पर स्वामी जी लखनऊ आए। इन्हीं सज्जन ने लखनऊ में स्वामी जी का शास्त्रार्थ पंडित गंगाधर शास्त्री से करवाया। शास्त्रार्थ में स्वामी जी की प्रतिज्ञा थी वेद में मूर्ति पूजा के लिए कोई स्थान नहीं है, जबकि पंडित को सिद्ध करना था कि वेदों में मूर्तिपूजा का आदेश है। शास्त्रार्थ प्रारम्भ हुआ। स्वामी जी ने अपनी प्रतिज्ञा सिद्ध की। पंडित गंगाधर इधर-उधर से मंत्र देकर अपने हिसाब से उसका अर्थ करने लगे और जब तक स्वामी जी उनके अर्थ का खण्डन करें तब तक पंडित के समर्थन में आए लोगों ने हल्ला मचा दिया कि दयानन्द हार गए। एक बार फिर दयानन्द के साथ धोखा हुआ। परन्तु उनके चेहरे पर विषाद् के कोई चिह्न नहीं थे। लाला गजाधर प्रसाद ने स्वामी दयानन्द को लखनऊ बुलाया था परन्तु उन्होंने ही इस धूर्त पंडित गंगाधर का सम्मान किया। इस सब का मतलब यही निकलता है कि इन लोगों का षड्यंत्र था, शास्त्रार्थ तो एक नाटक था। इनका उद्देश्य स्वामी जी को अपमानित करना था। परन्तु दयानन्द को इस सब की परवाह कहाँ थी। वे इससे अपने सत्य कथन से विरत होने वाले नहीं थे। परन्तु स्वामी जी अब गजाधर प्रसाद के आवास पर रहना उचित नहीं समझते थे, अतः वहाँ से राजा ओयल के बंगले में जो कि कैसरबाग में था, चले गए। बाद में गंगाधर के एक शिष्य ने गंगाधर की पोल खोली, उसका नाम केदारनाथ चट्टोपाध्याय था।

मित्रो! स्वामी जी के जीवन से हम इतना कुछ सीख सकते हैं कि जिसका वर्णन सम्भव नहीं है। उनका जीवन जिन्दगी के हर मोड़ पर हमारा मार्गदर्शन कर सकता है। अब तक स्वामी जी का नाम भलीभाँति विख्यात् हो चुका था परन्तु उनके मन में अहंकार कुछ भी नहीं था। आजकल हम देखते हैं कि जरा से किसी पद पर आ

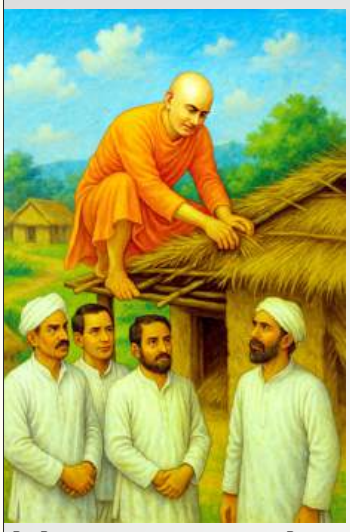

जाते हैं तो फिर अपने हाथ से काम करने में शर्म महसूस करते हैं। परन्तु दयानन्द उस मिट्टी के बने हुए नहीं थे। कासगंज की पाठशाला जब वे पहुँचे तो देखा बरसात में उसका छप्पर गिर गया था। स्वामी जी ने अध्यापकों को प्रोत्साहित किया और सबसे पहले स्वयं बनाना प्रारम्भ किया। तब अध्यापक भी साथ लग गए। कल्पना कीजिए स्वामी दयानन्द के स्तर का विख्यात् संन्यासी छप्पर बनाने के काम में तनिक भी संकोच नहीं करते। महापुरुषों के जीवन के एक-एक संकेत आपके जीवन निर्माण में सहायक हो सकते हैं।

मान अपमान स्वामी जी के मन को छूकर के भी नहीं गया था। उन्हें बस एक धुन थी वेदों की सत्य शिक्षा पर संसार चलने लगे। अलीगढ़ में एक संस्कृत पाठशाला में पंडित मिहिर चन्द अध्यापक थे। वे सदा कहते थे कि दयानन्द अगर अलीगढ़ आएं तो मैं २ मिनट में उनको परास्त कर दूँगा। पर जब दयानन्द आ गए तो वह कन्नी काटने लगे। बहाना बनाया कि दयानन्द नास्तिक हैं मैं उनके मुख के सामने बैठकर शास्त्रार्थ नहीं कर सकता, क्योंकि मैं उसकी सूरत नहीं देखना चाहता। स्वामी जी ने बड़ी सरलता से कहा ना देखना सूरत। बीच में एक पर्दा डाल देना और हम शास्त्रार्थ कर लेंगे, परन्तु वे शास्त्रार्थ करने नहीं आए।

यहीं एक दूसरी मनोरंजक घटना हुई। एक पंडित आया और शिवालय के चबूतरे पर बैठकर बात करने लगा। स्वामी जी नीचे फर्श पर बैठे थे। सौ डेढ़ सौ मनुष्य वहाँ थे। लोगों ने उसको कहा कि भाई स्वामी जी जब नीचे बैठे हैं तो तुम भी नीचे आकर के बैठो, यही सभ्यता है। परन्तु वह नहीं माना। स्वामी जी बोले कोई चिन्ता की बात नहीं ऊपर नीचे बैठने से कोई छोटा बड़ा नहीं हो जाता। और फिर विनोदपूर्वक बोले देखो अगर ऊपर नीचे आसन से बड़ा छोटा मानते हो तो यह जो कौवा वृक्ष पर बैठा है यह पंडित जी से भी ऊँचा बैठा है।

स्वामी जी का स्वराज चिन्तन यदा कदा उनके जीवन में दिखता ही रहता था। स्वदेशी, स्वभाषा, स्व-संस्कृति और स्वराज का उपदेश भी करते रहते थे। अलीगढ़ के इस प्रवास में भी जो कि जनवरी १८७४ के लगभग था स्वामी स्वदेशी का उपदेश देते थे। अलीगढ़ के ठाकुर भोपाल सिंह का पुत्र उधो सिंह विदेशी वस्त्र पहनकर महाराज की सेवा में आया तो उन्होंने उसे स्वदेशी वस्त्र पहनने का उपदेश दिया।

अलीगढ़ प्रवास में प्रसिद्ध नेता सर सैय्यद अहमद खान स्वामी जी से मिलने आए और पूछा कि यह समझ नहीं आता कि थोड़े से हवन से वायु कैसे शुद्ध हो जाएगी? स्वामी जी ने कहा कि जैसे थोड़े से बघार से सारी दाल सुगन्धित हो जाती है और दूर तक उसकी सुगन्ध जाती है और पता चल जाता है, इसी प्रकार से हवन में डाली हुई सामग्री छिन्न-भिन्न होकर वायु में फैलकर उसका सुधार कर देती है।

अलीगढ़ प्रवास में ही राजा जयकिशन दास स्वामी जी के स्नेह-पात्र बने और वस्तुतः उनका निवेदन ही स्वामी जी के आगे के लेखन का आधार बन गया। राजा साहब ने कहा कि स्वामी जी आपके उपदेश आर्य जाति के लिए बहुत उपयोगी हैं परन्तु उन्हें लेखबद्ध करके प्रकाशित करना चाहिए। आप आज्ञा करें उसका खर्च भी मैं ही वहन करूँगा ऐसा उन्होंने आश्वासन दिया। इन्हीं राजा जयकृष्ण दास के प्रबन्ध में १८७५ में सत्यार्थ प्रकाश छपा।

प्रस्तुति- नवनीत आर्य, नवलखा महल, उदयपुर
साभार- देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय रचित 'महर्षि दयानन्द चरित'

रात तक होती रही गीत-गजलों की झड़ी।

नागदा जं. निप्र- प्रतिवर्षानुसार इस बार भी १ अगस्त को शाम ७.३० पर हिन्दी विद्या सदन के सुलक्ष्मी सभागार दयानन्द कॉलोनी पर आयोजित कवि संगोष्ठी में मंत्रणा साहित्यिक संस्था, अभिव्यक्ति विचार मंच, समझ साहित्यिक संस्था, हिन्दी प्रचार सेवा समिति व आर्य समाज

नागदा के पदेन सभासदों द्वारा मालवी के सशक्त हस्ताक्षर, हिन्दी भाषा भूषण, वरिष्ठ साहित्यकार का शॉल, मणिमाला, पुष्पमाला, स्मृति चिन्ह, हाथ घड़ी व प्रीति की भोर गीत संग्रह, होरी का दर्द काव्य संग्रह, सभ्य कुत्ता लघुकथा- कहानी संग्रह व सृजन के स्वर काव्य संकलन भेंट कर डॉ. पं. लक्ष्मीनारायण सत्यार्थी का बहुमान कर जन्मदिवस को यादगार बना दिया। जानकारी देते हुए सुन्दरलाल उपाध्याय कोकिल ने बताया कि कवि संगोष्ठी में डॉ. पं. सत्यार्थी के ७३ बसन्त का भोग, भोग चुके ७३ मोमबत्तियाँ को स्वस्ति वाचन वेद मन्त्रों को पढ़कर प्रज्ज्वलित कर दीर्घायुत्व की कामना की। अन्त में आभार डॉ. पं. लक्ष्मीनारायण सत्यार्थी ने माना। शान्तिपाठ के साथ देर रात तक चली संगोष्ठी का समापन हुआ।

- सुन्दरलाल उपाध्याय कोकिल

दयानन्द कन्या विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस समारोह

आर्य समाज हिरण मगरी सेक्टर ४, उदयपुर द्वारा संचालित दयानन्द कन्या विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किया गया। विद्यालय के उपमंत्री डॉ. भूपेन्द्र शर्मा ने बताया कि डॉ. महेश भटनागर और डॉ. रेनू भटनागर के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न कार्यक्रम में प्रेरक लघु नाटिकाएँ एकलव्य और जलियांवाला बाग का मंचन किया गया। विशिष्ट अतिथि लायन्स क्लब मेवाड़ गौरव की अध्यक्ष माधवी शर्मा और उनकी टीम द्वारा सेनेटरी पैड डिस्ट्रॉयर

मशीन विद्यालय को भेंट की गई। स्वागत विद्यालय के मंत्री कृष्ण कुमार सोनी ने, विद्यालय परिचय मानद निदेशक पुष्पा सिंधी ने और आभार विद्यालय के प्रधान भँवरलाल आर्य द्वारा ज्ञापित किया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने व्यायाम प्रदर्शन, देश भक्ति गीत, राजस्थानी लोक नृत्य, आर्य समाज के नियम, हिन्दी और अंग्रेजी में स्वतंत्रता दिवस पर भाषण प्रस्तुत किए। विद्यालय के संस्थापक स्मृति शेष जितेन्द्र पाल शर्मा की स्मृति में आयोजित कविता, गीत और प्रेरक प्रसंग प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। मंच संचालन आर्य समाज के प्रचार मंत्री डॉ. भूपेन्द्र शर्मा ने किया। शिक्षाविद् डॉ. सतीश भारद्वाज, विद्यालय प्रधानाचार्य प्रेमलता मेनारिया, उप प्रधानाचार्य नाजुक छाजेड़, पूजा गौड़, ललिता यदुवंशी, उपाध्यक्ष ललिता मेहरा, कोषाध्यक्ष प्रीति चौहान, आर्य समाज हिरण मगरी के मंत्री वेद मित्र आर्य, कोषाध्यक्ष रमेश चन्द्र जायसवाल, उपमंत्री सरला गुप्ता आदि ने कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग किया। स्वच्छ भारत, स्वावलम्बी भारत, स्वदेशी अपनाओ भारत के संकल्पों के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में विद्यार्थियों के अभिभावक, विशिष्ट अतिथिगण और आर्यजन उपस्थित रहे।

- डॉ. भूपेन्द्र शर्मा; उप मंत्री-दयानन्द कन्या विद्यालय, उदयपुर

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर यज्ञानुष्ठान, भजन एवं सत्संग

आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर द्वारा रविवार को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पावन पर्व पर यज्ञ, भजन और प्रवचन का आयोजन समाज के सत्संग भवन में श्रद्धा एवं उत्साह के साथ किया गया।

समाज के प्रचार मंत्री डॉ. भूपेन्द्र शर्मा ने बताया कि विशेष स्वस्तिवाचन और शान्तिकरण के वैदिक मंत्रों से वृहद् यज्ञ रामदयाल मेहरा के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। यज्ञानुष्ठान के पश्चात् आयोजित सत्संग में उगंता यादव, राधा त्रिवेदी और भवानी दास आर्य ने श्रीकृष्ण भक्ति के भावपूर्ण भजनों से वातावरण को भक्तिमय बना दिया।

मुख्य अतिथि श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष अशोक आर्य ने अपने प्रवचन में श्रीकृष्ण के चरित्र को जीवन आचरण में उतारने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि श्रीकृष्ण ऐसे आप्त महापुरुष थे जिन्होंने सदैव धर्म, नीति और सत्य के लिए समाज एवं राष्ट्र के उत्थान में योगदान दिया। महाभारत में अर्जुन को दिया गया गीता उपदेश आज भी सम्पूर्ण विश्व के लिए मार्गदर्शक है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के मंत्री भवानी दास आर्य और हीरालाल आर्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन समाज के मंत्री वेदमित्र आर्य ने किया। इस अवसर पर समाज के प्रधान भँवरलाल आर्य, उपप्रधान कृष्ण कुमार सोनी, दयानन्द कन्या विद्यालय की निदेशक पुष्पा सिन्धी, उपमंत्री सरला गुप्ता और सुभाष चन्द्र कोठारी, कोषाध्यक्ष रमेश चन्द्र जायसवाल सहित बड़ी संख्या में आर्यजन उपस्थित रहे।

- डॉ. भूपेन्द्र शर्मा

नहीं है चैट जी पी टी तटस्थ

भारत को जब आजादी मिली थी तो एक इकोसिस्टम, विशेष रूप से शिक्षा और पत्रकारिता इन दोनों क्षेत्रों में वामपंथी विचारधारा का तैयार किया गया। जो देखने में तो बड़ा ज्ञान सम्पन्न प्रतीत होता था, (विशेषकर हाई क्वालिटी इंग्लिश के चलते) परन्तु उसका कार्य हर भारतीय उच्च मूल्य को हीन बताना और हर व्यवस्था को कमजोर करना था। आज हम नौजवान पीढ़ी में भारतीय मूल्यों के प्रति जो असंवेदनशीलता देख रहे हैं, वह अनायास नहीं हुई। उस स्थिति को लाने में इस इकोसिस्टम ने निरन्तर कार्य किया और आज भी कर रहा है। अभी भी यह ईकोसिस्टम उतना ही मजबूत है और यहाँ तक कि जो तकनीकी आविष्कार हो रहे हैं आश्चर्य की बात यह है कि इसके दर्शन आपको वहाँ भी हो जाते हैं।

पिछले दिनों हम चैट जी पी टी पर कुछ अनुसंधान कर रहे थे। बातचीत में जब चैट जी पी टी के द्वारा पाश्चात्य मीडिया को स्वतंत्र माना गया तो हमने कई उदाहरण देकर के भारतीय मीडिया की स्वतंत्रता को उसके समक्ष स्थापित किया। तो उसने इस बात को स्वीकार कर लिया परन्तु बिना पूछे भी कुछ ऐसे मीडिया हाउस के नाम स्वतंत्र पत्रकारिता की मिसाल के तौर पर लिए जो कि वास्तव में उक्त इकोसिस्टम के आज भी ध्वजवाहक हैं। हमें बड़ा आश्चर्य हुआ कि चैट जी पी टी ने केवल इन्हीं तीन चार मीडिया हाउसेस का नाम क्यों लिया? विचार करने पर स्पष्ट हुआ कि उक्त इकोसिस्टम पता नहीं चैट जी पी टी की तरह से कितने-कितने माध्यमों से आज भी अपनी प्रभावपूर्ण भूमिका निभा रहा है। भारतीय संस्कृति को पुनर्स्थापित करने का स्वप्न देखने वाले को इन सभी बिन्दुओं के निराकरण पर विचार करना पड़ेगा। खतरा यह है कि प्रायः ऐसे सभी तकनीकी प्लेटफॉर्म्स को हम सभी तटस्थ मानकर चलते हैं और उनके द्वारा बताई हुई सूचनाओं को 100% सही मान लेते हैं। यहाँ हमने इस विवरण को इसलिए दिया है कि ऐसा है नहीं। अतः सावधान रहना ही श्रेयस्कर है।

मूल शंकर का प्रश्न आज भी अनुत्तरित है।

आज से लगभग २०० वर्ष पूर्व शिवरात्रि की रात्रि को शिवलिंग के समक्ष बैठे बालक मूलशंकर ने शिवलिंग पर चूहों को चढ़ते देखा, अपने पिता से जो प्रश्न किया था इतने शक्तिशाली शिवजी पर चूहा चढ़कर उत्पात कर रहे हैं ऐसा कैसे सम्भव है, पिता तब उत्तर नहीं दे पाए। यह प्रश्न आज भी अनुत्तरित ही है। पूर्वाग्रह छोड़ चिन्तन करें तो सभी आसानी से सत्य समझ सकते हैं।

सिलचर के शनि मंदिर में हाल ही (१५ अगस्त २०२५ की रात) में एक सनसनीखेज चोरी और मूर्ति तोड़फोड़ की घटना घटी। यह मंदिर हैलाकांडी रोड, नेशनल हाइवे पॉइंट पर स्थित है, जिसे चोरों ने शुक्रवार रात को निशाना बनाया।

चोरों ने मंदिर के पिछले हिस्से की खिड़की और लोहे की ग्रिल तोड़कर अन्दर घुसकर सोने-चांदी के गहने और अन्य आभूषण चुराए। इनमें दो सोने की चैन, एक बड़ी चांदी की चैन, कंगन और एक शालिग्राम

विष्णु की मूर्ति की स्वर्ण आंखें शामिल थीं।

इस घटना में चोरों ने भगवान शनि की मूर्ति को व्यापक क्षति पहुँचाई। चोरी के बाद श्रद्धालु और समिति के सदस्य मंदिर पहुँचे तो टूटे हुए मूर्ति और बिखरे सामान को देख हैरान रह गए।

घटना के बाद पुलिस ने फॉरेंसिक जाँच, फिंगरप्रिंट और सीसीटीवी फुटेज के जरिए दो आरोपियों- अनीक दास (२७ वर्ष) और पल्लव दास (२६ वर्ष) को २४ घण्टे के भीतर गिरफ्तार कर लिया। इनके पास से एक सोने की चैन, मूर्ति की सोने की आँख और दो चांदी के कंगन बरामद किए गए।

पुलिस पूछताछ में पता चला कि आरोपियों ने चोरी किए गए गहनों को स्थानीय ज्वैलरी दुकान में बेचा था, जिस दुकान के मालिक को भी गिरफ्तार किया गया है।

पुलिस ने अपना काम तत्परता के साथ कर लिया किन्तु क्या आपको इस घटना को देख, सुन, पढ़कर मूलशंकर (स्वामी दयानन्द) का प्रश्न प्रासंगिक नहीं लगता?

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

समस्त सुधी पाठकों, वैदिक विद्वानों, लेखकों, चिन्तकों, आर्यसमाज के हितैषी महानुभावों से अनुरोध है कि अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को सफल और प्रेरणाप्रद बनाने के लिए अनुभवों के आधार पर अपने उपयोगी सुझाव अवश्य प्रदान करें। आपने वर्ष २००६ के उपरान्त तथा इससे भी पूर्व में आयोजित महासम्मेलनों में भाग लिया है। इन सम्मेलनों में आपको कुछ व्यवस्थाएँ अच्छी लगी होंगी तथा कुछ में सुधार की अपेक्षा भी रही होगी।

अतः आपसे निवेदन है कि आने वाले सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को ऐतिहासिक रूप से सफल और अविस्मरणीय बनाने के लिए कृपया अपने सुझाव अतिशीघ्र भेजने की कृपा करें, जिससे उन सुझावों पर विचार करके उन्हें प्रयोग में लाया जा सके। कृपया अपने सुझाव निम्न पते पर भेजें अथवा ईमेल करें -

संयोजक समिति- आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-२०२५, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली

मो. ९३११७२११७२, Email : aryasabha@yahoo.com

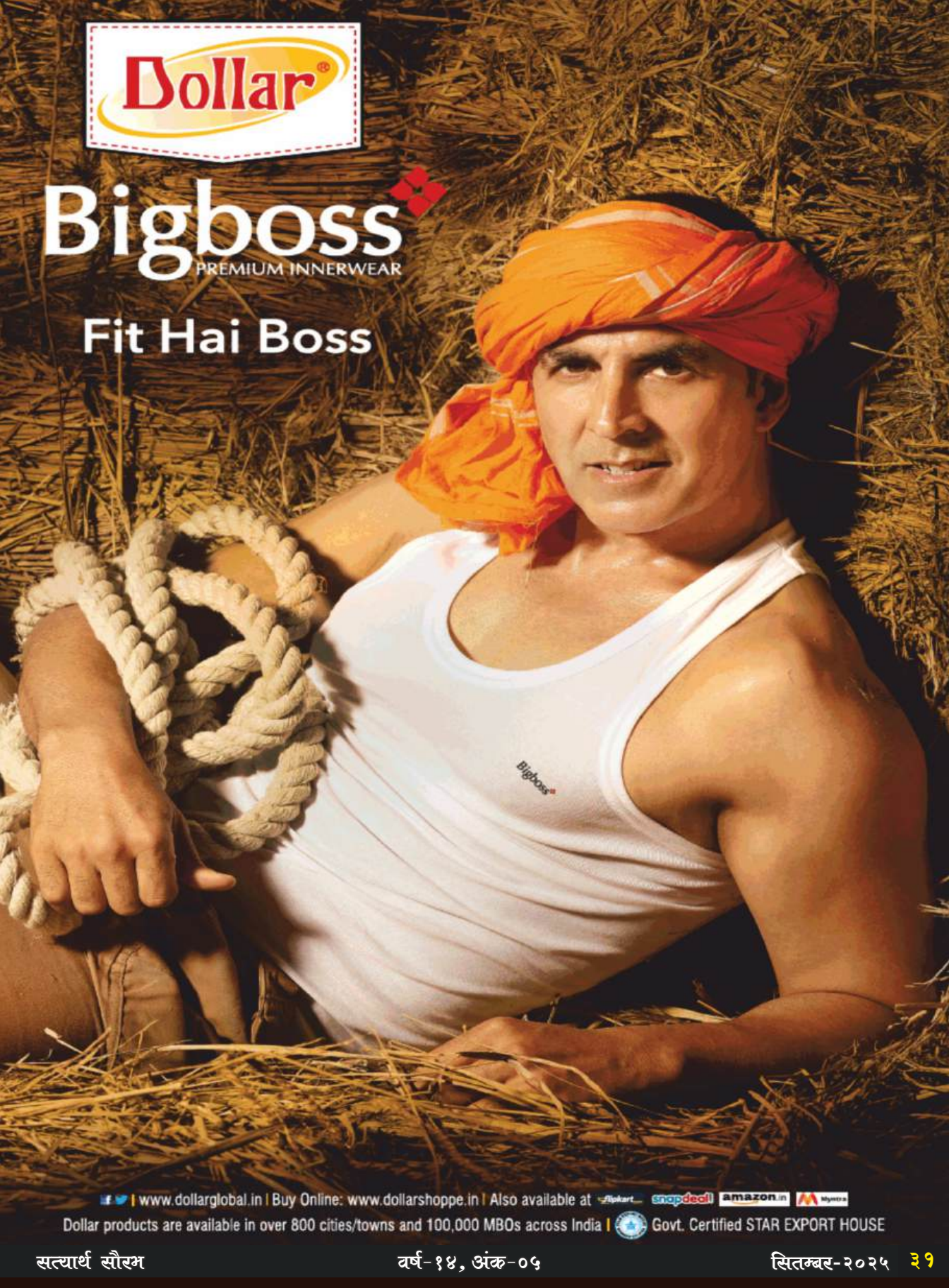
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
Bigboss
www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India |
Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 September-2025 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2021-2023

जब तक मनुष्य धार्मिक रहते हैं तभी तक राज्य बढ़ता रहता है और जब दुष्टाचारी होते हैं तब नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है।

सत्यार्थ प्रकाश; षष्ठ समुल्लास पृष्ठ १४०

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक- मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर